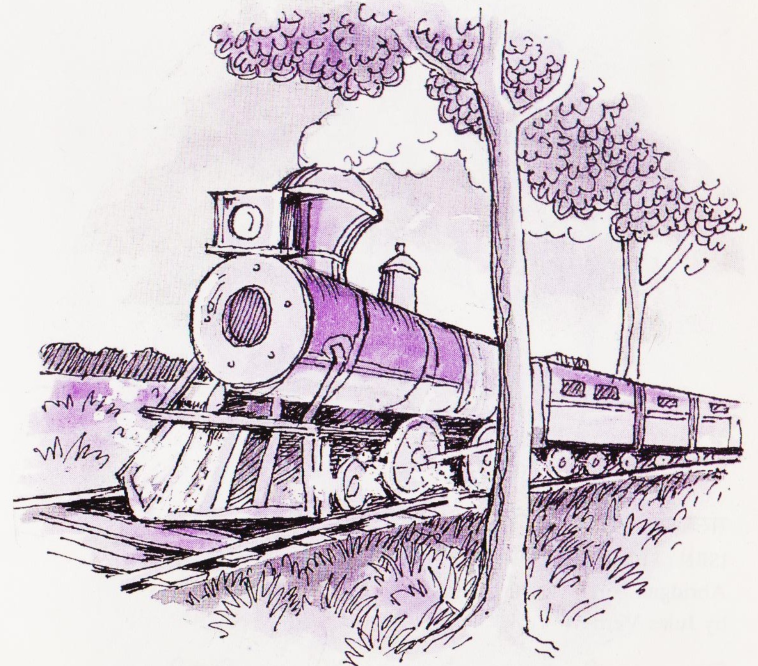
80 दिन में दुनिया की सैर



जले वर्न के प्रसिद्ध उपन्यास

अस्सी दिन में दुनिया की सैर



जुले वर्न के प्रसिद्ध उपन्यास
'एराउंड दि वर्ल्ड इन एटी डेज़'
का सरल हिन्दी रूपान्तर

रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास

मूल्य : बीस रुपये (20.00)

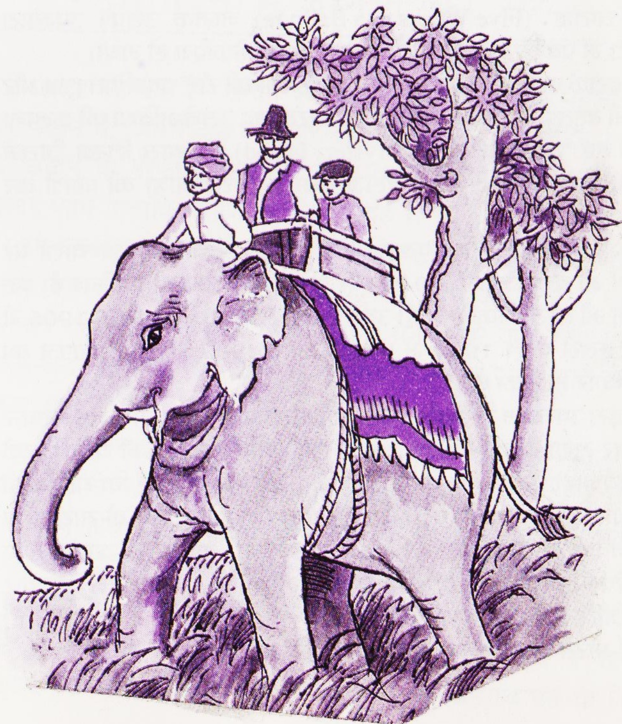
संस्करण : 2001 © शिक्षा भारती

ISBN : 81-7483-012-X

Abridged Hindi version of **'Around the World in 80 Days'**
by Jules Verne

शिक्षा भारती, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

अस्सी दिन में दुनिया की सैर



जुले वर्न : परिचय

प्रसिद्ध लेखक जुले वर्न का यह यात्रा-उपन्यास '80 दिन में दुनिया की सैर' विश्व साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों में गिना जाता है। जुले वर्न ने दुनिया के पहले वैज्ञानिक उपन्यास लिखे और बहुत-सी ऐसी कल्पनाएं कीं जिनमें से कई तो उसके अपने जीवन काल में ही सफल हो गईं, कुछ बाद में सामने आईं।

1828 में जब जुले वर्न का जन्म हुआ तब वैज्ञानिक विचार फैलने लगे थे और मशीनों का निर्माण होना आरंभ हो गया था। जुले वर्न ने इस सबका अध्ययन किया और भविष्य की संभव कल्पनाएं करना भी आरंभ किया। उसने भूगोल भी ध्यानपूर्वक पढ़ा और साहसिक कार्यों में रुचि होने के कारण यात्राओं को अपने लेखन का विषय बनाया। 'गुब्बारे में पांच सप्ताह' (Five Weeks in a Balloon) नामक उसका उपन्यास 1863 में प्रकाशित हुआ और छपते ही बहुत लोकप्रिय हो गया।

इसके दस साल बाद '80 दिन में दुनिया की सैर' प्रकाशित हुआ और यह भी बहुत पसंद किया गया। इसके तुरंत बाद उसने भविष्य की कल्पना करते हुए 'रहस्यमय द्वीप' (Mystery Island) उपन्यास लिखा जिसमें पनडुब्बी, टेलीविज़न, हवाई जहाज़ तथा अन्तरिक्ष यात्रा की पहली बार कल्पना की गई।

जुले वर्न ने अनेक पुस्तकें लिखीं और उसके कई उपन्यासों पर फिल्में भी बनीं जिनमें '80 दिन में दुनिया की सैर' भी शामिल है। यह फिल्म भी बहुत लोकप्रिय हुई। उनका देहांत 77 वर्ष की आयु में 1905 में हुआ। इससे पहले 1901 में पनडुब्बी और 1903 में हवाई जहाज़ का आविष्कार हो चुका था।

इस उपन्यास में लंदन का एक अमीर अपनी पूरी संपत्ति यह कहकर दांव पर लगा देता है कि वह 80 दिन में समूची दुनिया की यात्रा करके दिखायेगा। लोग उसका विश्वास नहीं करते और कहते हैं कि यह किसी भी प्रकार संभव नहीं है। परंतु यह व्यक्ति अपने एक नौकर के साथ यात्रा पर निकल पड़ता है और यूरोप होते हुए भारत, हांगकांग, जापान और अमेरिका घूमकर आयरलैंड के रास्ते 80 दिन में वापस लंदन पहुंचकर शर्त जीत लेता है। उपन्यास बहुत रोचक और जानकारी से भरपूर है। इसमें भारत के संबंध में बहुत अच्छे विवरण हैं।



80 दिन में दुनिया की सैर

सन् 1872 की बात है। लन्दन के बर्लिंगटन गार्डन्स नामक मुहल्ले के उस मकान में, जिसमें कुछ बरस पहले प्रसिद्ध नाटककार शेरीडन रहता था, लन्दन के 'रिफार्म क्लब' के एक सदस्य मिस्टर फाग रहते थे। मिस्टर फाग हालांकि अंग्रेज थे, लेकिन वह लन्दन के रहने वाले नहीं थे। हां, यह बात जरूर सही थी कि वे बरसों लन्दन के बाहर नहीं गए। उनका काम था दिन-भर अखबार पढ़ना और शाम को क्लब में ताश खेलना। वह अपने मकान में अकेले रहते थे। उनके यहां कभी कोई मिलने-जुलनेवाला भी नहीं आता था। सिर्फ एक नौकर उनके यहां काम करता था।

मिस्टर फाग कुछ सनकी दिमाग़ के आदमी थे। वह नौकर से पूरी मुस्तैदी से काम लेते थे। वह चाहते थे कि हर चीज़ ठीक हो, और जैसा हुक्म दिया जाए, उसका ठीक-ठीक पालन किया जाए। उनका नौकर जेम्स उनकी आदत समझ गया था और बहुत संभलकर काम करता था। लेकिन जिस दिन से हमारी यह कहानी आरम्भ हो रही है, यानी दो अक्तूबर को मिस्टर फाग ने जेम्स को अपने यहां से काम छोड़कर चले जाने का नोटिस दे दिया। जेम्स का अपराध यह था कि

वह मिस्टर फाग के लिए दाढ़ी बनाने का पानी 86 डिग्री फारेनहाइट के बजाय 84 डिग्री तक ही गरम करके लाया था। बात छोटी-सी थी, लेकिन मिस्टर फाग इस तरह की लापरवाही को पसन्द नहीं करते थे। उन्होंने जेम्स की जगह एक अन्य नौकर को बुलवाया था और उसी की प्रतीक्षा में बैठे थे।

ठीक साढ़े ग्यारह बजे जब कि वह बाहर जानेवाले थे, उनके निकाले हुए नौकर जेम्स ने आकर सूचना दी, 'मालिक, आपने जिस आदमी को बुलवाया था, वह आ गया है।' इतने में तीस साल के एक आदमी ने कमरे में प्रवेश किया और झुककर मिस्टर फाग को नमस्कार किया। मिस्टर फाग ने उसको देखते ही पूछा, 'क्या तुम फ्रांसीसी हो ?'

आगन्तुक ने जवाब दिया, 'जी हां, मेरा नाम है जां-पासे पारतू। लेकिन आप मुझको अंग्रेज़ी ढंग से जीन कहकर पुकार सकते हैं। आपने मुझको काम के लिए बुलाया था।'

मिस्टर फाग ने कहा, 'हां, तुम्हें आज बुधवार दो अक्तूबर को दिन के साढ़े ग्यारह बजे से नौकर रखा जाता है। तुम जेम्स से पूछकर सारा काम संभाल लो।'

यह कहकर मिस्टर फाग चुपचाप उठ खड़े हुए। उन्होंने अपना हैट सिर पर रखा और बिना बोले घर के बाहर हो गए। उनके जाने के बाद जेम्स ने जीन को घर का सारा कामकाज समझा दिया। फिर वह भी वहां से चला गया।

जीन ने पूरे घर को घूमकर देखा। कई जगह बिजली की घंटियां लगी थीं। सभी कमरों में बिजली की घड़ियां थीं, जो एक-सा समय बताती थीं। ऊपर से नीचे और आसपास के कमरों में बात करने के लिए लोहे की नलियां लगी हुई थीं।

जीन को यह पता लगाने में देर नहीं हुई कि उसका कमरा कौन-सा है। उसके कमरे में भी दीवार पर एक घड़ी टंगी हुई थी और घड़ी के नीचे एक कार्ड टंगा था, जिस पर उसका दिन-भर का कार्यक्रम

लिखा हुआ था। सवेरे आठ बजे से लेकर रात के बारह बजे तक नौकर को क्या करना है, इसका पूरा ब्यौरा उस कार्यक्रम में लिखा था। कार्ड में लिखा था–चाय और टोस्ट का नाश्ता सुबह 8 बजकर 25 मिनट पर, दाढ़ी बनाने का गरम पानी 9 बजकर 37 मिनट पर, इत्यादि। जीन ने इन चीजों को भली-भांति याद कर लिया। दोपहर का भोजन मिस्टर फाग क्लब में ही किया करते थे।





2

मिस्टर फाग ठीक साढ़े ग्यारह बजे अपने घर से निकले और अपने दाहिने पांव को 575 बार और बाएं को 576 बार आगे रखते हुए पालमाल स्ट्रीट में अपने क्लब में जा पहुंचे। रास्ते में चलते समय वह अपने कदम गिना करते थे और इसका पूरा हिसाब रखते थे कि उनका कौन-सा पैर कितनी बार उठा।

वह अन्दर जाकर अपनी निश्चित जगह पर बैठ गए। नौकर ने चाय सामने रख दी। कुछ देर तक वह वहीं बैठे रहे। फिर 12 बजकर 37 मिनट पर उठकर क्लब के ड्राइंगरूम में चले गए जहां नौकर ने 'टाइम्स' अखबार की एक प्रति उनके सामने रख दी। 15 मिनट तक वह इस अखबार को पढ़ते रहे। इसके बाद नौकर ने 'स्टैण्डर्ड' नाम का अखबार उनके सामने रखा। दोपहर में उन्होंने भोजन किया और इसी तरह एक-के-बाद एक अखबार पढ़ते रहे।

शाम को क्लब के दूसरे सदस्य भी एक-एक करके वहां इकट्ठे होने लगे। क्लब के सदस्यों में लन्दन के कई प्रतिष्ठित नागरिक थे। जैसे इंजीनियर मिस्टर स्टुअर्ट, बैंक-मालिक मिस्टर जान और मिस्टर सैमुएल, बैंक ऑफ इंग्लैण्ड के एक डायरेक्टर मिस्टर राल्फ आदि-आदि।

मिस्टर टामस ने, जो कि शराबख़ाने के मालिक थे, बैठते ही मिस्टर राल्फ से पूछा, 'कहो राल्फ, उस डकैती का क्या हुआ ? क्या बैंक का रुपया चला जाएगा और डाकू कभी-भी नहीं पकड़े जाएंगे।'

मिस्टर राल्फ ने कहा, 'डकैती क्या यह एक तरह की चोरी ही है ! मुझे तो उम्मीद है कि चोर पकड़े जाएंगे। अमेरिका और यूरोप के सभी बड़े-बड़े शहरों में चुने हुए गुप्तचरों को भेजा गया है। चोर के लिए बच निकलना आसान नहीं होगा।'

'क्या आपको चोर का कुछ हुलिया मालूम है ?' एक आदमी ने पूछा।

राल्फ ने गंभीरता से उत्तर दिया, 'हां-हां, क्यों नहीं, लेकिन वह चोर है ही नहीं।'

'यह आप क्या कह रहे हैं ? जो आदमी बैंक से 55 हज़ार पौंड के नोट चुरा ले, वह चोर नहीं तो क्या है ?'

'हां, वह चोर नहीं है।' मिस्टर राल्फ ने कहा।

'तो शायद वह कोई व्यापारी आदमी है, है न ?' दूसरा बोला।

तब तक मिस्टर फाग भी उन लोगों के बीच पहुंच गए थे और अखबार पर से अपनी आंखें हटाते हुए बोले, 'हां, 'मार्निंग पोस्ट' में इस खबर को पढ़ते वक्त मुझे भी लगा कि वह कोई शरीफ आदमी ही हो सकता है।'

अब सब लोग इस पर बहस करने लगे। मामला यह था कि तीन दिन पहले बैंक ऑफ इंग्लैण्ड में एक बड़ी भारी चोरी हो गई। चोर बैंक के बड़े ख़ज़ांची के सामने से 55 हजार पौंड के नोट उड़ाकर चल दिया था। पुलिस बड़ी सरगमी से चोर की तलाश में लगी थी। बड़े होशियार गुप्तचरों को लिवरपूल, ग्लासगो, स्वेज़, न्यूयार्क, पेरिस आदि बड़े-बड़े नगरों में चोर की तलाश के लिए भेज दिया गया। चोर को पकड़वाने के लिए दो हज़ार पौंड का इनाम रखा गया था। यह भी घोषित किया गया था कि जितना मिलेगा उसका पाँच प्रतिशत पकड़वाने वाले को दे दिया जाएगा।

सभी छोटे-बड़े बन्दरगाहों और रेलवे-स्टेशनों पर एक-एक आदमी इस चोर को पकड़ने के लिए तैनात कर दिया गया था। इस समय रिफार्म क्लब में इस बात पर बहस चल रही थी कि चोर को पकड़ा

जा सकेगा या नहीं। मिस्टर स्टुअर्ट ने कहा, 'मुझे तो लगता है कि उसको पकड़ पाना नामुमकिन है। वह कोई बहुत ही चालाक आदमी मालूम होता है।'

'यह सब बेकार की बात है। संसार में एक भी देश ऐसा नहीं बचा है, जहां वह अपने को छिपा सके।' राल्फ ने कहा।

'लेकिन दुनिया बहुत बड़ी है, मि. राल्फ !' स्टुअर्ट ने कहा।

मिस्टर फाग ने इसके जवाब में धीरे-से कहा, 'हां, कभी ज़रूर बहुत बड़ी थी दुनिया, लेकिन आज ऐसा नहीं है।'

राल्फ बोला, 'हां, मिस्टर फाग, आपका कहना सही है। दुनिया पहले से अब बहुत छोटी हो गई—छोटी इस माने में कि सौ साल पहले पूरी पृथ्वी का चक्कर लगाने में जितना समय लगता था, आज उससे बहुत ही कम लगता है। इसलिए अब चोर को पकड़ना भी पहले से ज़्यादा आसान है।'

उसकी बात का समर्थन किया एक दूसरे बैंक-मालिक जॉन ने। उसने कहा, 'हां, हां, इसमें कोई शक नहीं कि अब मुश्किल से अस्सी दिन के दौरान पूरी दुनिया का चक्कर लगाया जा सकता है। आज ही तो सवेरे के अखबार में लिखा है कि हिन्दुस्तान में बम्बई से इलाहाबाद तक रेल की लाइन खुल गई है। उसी तरह और भी दूसरी जगहों पर यात्रा की सुविधा बढ़ गई है। ज़रा आज का अखबार उठाना। अरे, यह नहीं, 'मार्निंग क्रानिकल' देना। उसमें लिखा है कि ठीक अस्सी दिन में दुनिया की यात्रा की जा सकती है। देखो, इस अखबार में इस तरह हिसाब लगाया गया है :—

लन्दन से स्वेज़, रेल और स्टीमबोट के ज़रिए	7 दिन
स्वेज़ से बम्बई, स्टीमर के ज़रिए	13 दिन
बम्बई से कलकत्ता, रेल से	3 दिन
कलकत्ता से हांगकांग, स्टीमर से	13 दिन
हांगकांग से याकोहामा, स्टीमर से	6 दिन

योकोहामा से सान फ्रांसिस्को, स्टीमर से	22 दिन
सान फ्रांसिस्को से न्यूयार्क, रेल से	7 दिन
न्यूयार्क से लन्दन, स्टीमर और रेल से	9 दिन
योग	80 दिन

'तो दोस्तो, इस तरह कुल अस्सी दिन में दुनिया की यात्रा की जा सकती है और इसमें मौसम के खराब होने या दुर्घटनाओं आदि के कारण यात्रा में कुछ दिनों की बाधा पड़ने की भी गुंजाइश रखी गई है।'

इस पर स्टुअर्ट ने हंसते हुए कहा, 'इस तरह यात्रा करनी असंभव है। यह सब सिर्फ हिसाब लगाने की बात है। इसको पूरा करना आसान नहीं है। मैं तो चार हज़ार पौंड की बाज़ी लगा सकता हूं कि हममें से कोई इस यात्रा को अस्सी दिन में पूरा नहीं कर सकता।'

इस पर मिस्टर फाग ने कहा, 'यह यात्रा बिलकुल संभव है, और तुम जब कहो तब मैं इस यात्रा पर निकल सकता हूं। लेकिन इतना याद रखो कि यात्रा का पूरा खर्च तुमको देना पड़ेगा। मेरे बीस हज़ार पौंड बैंक में जमा हैं। अगर मैं इस यात्रा में असफल हुआ तो सब पौंड तुम्हारे नाम कर दूंगा।

उनकी इस बात को सुनकर सभी लोग चकित रह गए। एक आदमी बोला, 'लेकिन मिस्टर फाग, आप व्यर्थ ही अपनी पूंजी गंवाना चाहते हैं। अस्सी दिनों का यह हिसाब तो कम-से-कम दिनों का लगाया गया है। हो सकता है, बीच में कुछ हो जाए और आपकी यात्रा निश्चित समय पर पूरी न हो सके।'

'मैंने खुद भी हिसाब लगाकर देखा है। यह अन्दाज़ बिल्कुल सही है। मैं इस यात्रा पर निकलने के लिए तैयार हूँ। अस्सी दिनों में या उससे भी कम में मेरी यात्रा पूरी हो जाएगी। अगर तुम्हें मेरी शर्त मंज़ूर हो तो बोलो।'

इस पर राल्फ और उसके दूसरे साथियों ने आपस में राय करके मिस्टर फाग का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उन लोगों के लिए पैसे का कोई महत्व नहीं था। जब वे लोग राज़ी हो गए तो मिस्टर फाग ने कहा, 'ठीक है, गाड़ी डोवर बन्दरगाह के लिए रात को 8.40 पर छूटती है। मैं उसी से रवाना हो जाऊंगा। और यह लो 20 हज़ार पौंड का चेक।' यह कहकर उन्होंने एक चेक लिखकर सबके सामने मेज़ पर रख दिया।

फिर उन्होंने अपनी जेब से एक डायरी निकालकर कहा, 'आज बुधवार 2 अक्तूबर है। मैं वापस लौटकर लन्दन में क्लब के इसी कमरे में शनिवार 21 दिसम्बर की शाम को ठीक 8.45 पर तुम लोगों से मिलूंगा। अगर मैं ऐसा नहीं कर सका तो मेरे ये 20 हज़ार पौंड तुम लोगों के हो जाएंगे; और अगर मैं लौट आया, तो स्टुअर्ट, तुम्हें अपना वादा पूरा करना पड़ेगा।'

इसके बाद मिस्टर फाग अपना हैट उठाकर और अपने मित्रों से विदा लेकर वहां से चल दिए। घर पहुंचने में उन्हें दस मिनट का समय लगा।

घर में जीन अपने मालिक के आने की राह देख रहा था। मिस्टर फाग ने पहुंचते ही कहा, 'जीन, हमें एक लम्बे सफर पर निकलना है। दस मिनट में गाड़ी जाती है। हम लोग यहां से डोवर के लिए रवाना होंगे। हम दुनिया की यात्रा पर जा रहे हैं।'

जीन ने आश्चर्य से पूछा, 'दुनिया की यात्रा !'

'हां, अस्सी दिन में हम पूरी दुनिया की यात्रा करके लौट आएंगे। जल्दी करो। हमारे पास वक्त नहीं है, जल्दी से तैयारी कर लो।'

'और सामान क्या-क्या लेना होगा ?'

'हमें किसी सामान की ज़रूरत नहीं है, सिर्फ एक झोला ले लेना। उसमें मेरे लिए दो कमीज़ और तीन जोड़े मोज़े रख लेना। यही सामान तुम भी ले लो। हमें जिस चीज़ की ज़रूरत पड़ेगी, उसे हम रास्ते में

खरीद लेंगे। साथ में दो-तीन कम्बल ले लेना, और जूते ज़रा मज़बूत निकालना, हालांकि बहुत सम्भव है कि हम लोगों को पैदल ज़्यादा न चलना पड़े। जाओ, ज़रा जल्दी करो !'

साढ़े आठ बजे तक तैयारी पूरी हो गई। मिस्टर फाग ने करीब 15 हज़ार पौंड के नोट भी साथ ले लिए। घर में अच्छी तरह ताला लगाया और फिर वे लोग स्टेशन के लिए रवाना हो गए। स्टेशन पर उन्होंने पेरिस के लिए पहले दरजे के दो टिकट खरीदे। जब प्लेटफार्म पर पहुंचे तो उन्हें यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि क्लब के उनके पांचों साथी उनको विदा करने के लिए वहां मौजूद थे। उन्होंने अपने मित्रों से कहा, 'अच्छा साथियो, मैं अपनी यात्रा पर रवाना हो रहा हूं। मेरे 'वीज़े' पर हर जगह मुहरें लगेंगी और उनको जांचा जाएगा। इससे तुम लोगों को मालूम हो जाएगा कि मैंने वास्तव में पूरी यात्रा की है।'

कुछ देर में गाड़ी आई। मिस्टर फाग अपने नौकर के साथ उसमें जा बैठे। मित्रों ने प्रेम से हाथ मिलाकर उनको विदा किया और गाड़ी ज़ोर से सीटी देकर वहां से चल पड़ी।



3

बुधवार 9 अक्तूबर को सवेरे 11 बजे स्वेज़ बन्दरगाह पर 'मंगोलिया' नाम के एक जहाज़ के पहुंचने की प्रतीक्षा की जा रही थी। यह जहाज़ स्वेज़ नहर से होकर बम्बई तक, और बम्बई से स्वेज़ बन्दरगाह तक चला करता था।

जहाज़ के आने की प्रतीक्षा में बन्दरगाह के घाट पर यात्रियों की भीड़ से कुछ अलग हटकर दो अंग्रेज़ टहल रहे थे और ग़ौर से इधर-उधर देख रहे थे। इनमें से एक तो स्वेज़ नगर में स्थित ब्रिटिश राजदूत था और दूसरा एक गुप्तचर था, जिसका नाम था फिक्स। वह उन गुप्तचरों में से ही एक था, जिन्हें बैंक ऑफ इंग्लैण्ड की उस बड़ी भारी चोरी का पता लगाने के लिए उधर तैनात किया गया था। उसका काम था स्वेज़ के रास्ते जाने वाले यात्रियों पर कड़ी निगाह रखना और अगर उसे किसी व्यक्ति के अपराधी होने का सन्देह हो तो तब तक उसके पीछे-पीछे लगे रहना जब तक कि उनकी गिरफ्तारी की व्यवस्था न हो जाए।

अभी दो दिन पहले ही फिक्स को लन्दन से अपने बड़े अधिकारी का एक तार मिला था, जिसमें अपराधी का पूरा हुलिया दिया हुआ था। फिक्स इनाम पाने की उम्मीद से और भी मुस्तैदी से काम कर रहा था। फिक्स ने ब्रिटिश राजदूत से पूछा, 'स्वेज़ में यह जहाज़ कितनी देर तक रुकेगा ?'

राजदूत ने बताया, 'सिर्फ चार घंटे, कोयला लेने के लिए। इसके बाद यह अदन में कोयला लेगा। स्वेज़ से अदन 1310 मील दूर है। अदन से जहाज़ सीधा बम्बई जाएगा।'

कुछ सोचकर फिक्स बोला, 'अगर चोर इसी रास्ते चला होगा तो वह स्वेज़ बन्दरगाह में ज़रूर रुकेगा और किसी दूसरे रास्ते से यहां से जाने की कोशिश करेगा। हो सकता है, वह एशिया के उन देशों में जाना चाहे जहां डच या फ्रांसीसियों का कब्ज़ा है, क्योंकि इतना तो उसे मालूम ही होगा कि भारत में वह उसी तरह बचकर नहीं रह सकता है, जिस तरह इंग्लैण्ड में नहीं रह सकता है।'

राजदूत ने उसकी बात का समर्थन किया और फिर वह वापस अपने दफ्तर में चला गया। फिक्स बड़ी मुस्तैदी से बन्दरगाह पर पहरा देने लगा। कुछ देर बाद जहाज़ आ पहुंचा। घाट से कई दर्जन नावें यात्रियों को लाने, ले जाने के लिए जहाज़ की तरफ चल पड़ीं। यात्रियों की संख्या बहुत अधिक थी। फिक्स बड़ी सावधानी से किनारे पर उतरने वाले यात्रियों को देख रहा था।

अचानक एक अंग्रेज यात्री भीड़ में लोगों को धक्का देता हुआ फिक्स के पास आया और उसके हाथ में अपना वीज़ा देते हुए ब्रिटिश राजदूत के कार्यालय का पता पूछने लगा। फिक्स ने वीज़ा को ग़ौर से पढ़ा तो उसका दिल ज़ोरों से धड़कने लगा, क्योंकि उसमें यात्री का जो परिचय दिया हुआ था, वह उस हुलिया से हू-ब-हू मिलता था, जो गुप्तचर विभाग ने उसके पास तार से भेजा था।

यह यात्री फाग का नौकर जीन था। उसने कहा, 'यह मेरे मालिक का वीज़ा है। वे जहाज़ में बैठे हैं।'

गुप्तचर ने कहा, 'ठीक है, तो अपने मालिक को भेज दो। उनको अपनी शिनाख़्त देने के लिए और यात्रा के बारे में बातचीत करने के लिए ब्रिटिश दूत से मिलना पड़ेगा।' यह कहकर उसने जीन को ब्रिटिश राजदूत के दफ्तर का रास्ता बता दिया।

जीन जब वापस जहाज़ की ओर लौट गया तो गुप्तचर जल्दी

से ब्रिटिश दूत के पास पहुंचा और बोला, 'इस जहाज़ में एक यात्री है, जिस पर मुझे पूरा शक है। बहुत मुमकिन है कि वही चोर निकले !'

राजदूत ने कहा, 'ठीक है मिस्टर फिक्स, आने दो उस आदमी को। लेकिन इतना याद रखो कि अगर वह वही आदमी है, जिसकी तुम लोगों को खोज है तो बहुत मुमकिन है कि वह यहां न आए। कोई भी चोर इस बात का अपने पीछे सबूत नहीं छोड़ना चाहता कि वह कहां और किसलिए जा रहा है। इसके अलावा भारत जाने के लिए वीज़ा की ज़रूरत नहीं होती।'

लेकिन तब तक मिस्टर फाग हाथ में झोला लिए हुए जीन के साथ वहां आ पहुंचे। ब्रिटिश राजदूत ने उनसे पूछताछ करनी शुरू की। मिस्टर फाग ने अपना और अपने नौकर का नाम बताया और यह भी बताया कि वे लन्दन से बम्बई जा रहे हैं। इसके बाद उन्होंने ब्रिटिश राजदूत से आगे की यात्रा के लिए वीज़ा मांगा। राजदूत ने बताया कि भारत जाने के लिए वीज़ा की ज़रूरत नहीं।

मिस्टर फाग ने कहा, 'मुझे अच्छी तरह मालूम है कि वीज़ा की ज़रूरत नहीं, लेकिन मुझे इस बात का सबूत अपने पास रखना है कि मैं स्वेज़ में आया था और इस बन्दरगाह से होकर गुज़रा था।'

'अगर ऐसा है तो लीजिए, लेकिन उसकी फीस आपको देनी पड़ेगी।' यह कहकर ब्रिटिश दूत ने मिस्टर फाग के लिए एक वीज़ा तैयार कर दिया और उस पर अपनी मुहर लगा दी। मिस्टर फाग ने फीस अदा की, झुककर सलाम किया और अपना सामान उठाकर वहां से जहाज़ की ओर चल दिए।

इधर मिस्टर फिक्स ने ब्रिटिश दूत से कहा, 'अभी तो इनकी बात से कुछ पता नहीं चलता। देखने में तो यह आदमी कुछ शरीफ़-सा मालूम होता है, लेकिन क्या ठिकाना ! जिस आदमी के बारे में खबर मिली है, उसके हुलिया में भी तो उसको बहुत शरीफ बताया गया है। खैर, मैं इसका पीछा करूंगा, देखें क्या नतीजा निकलता है।'

इस तरह गुप्तचर मिस्टर फिक्स भी एक यात्री के रूप में जहाज़ पर जा पहुंचा। उधर मिस्टर फाग ने जहाज के अपने कमरे में पहुंचकर अपनी डायरी में अब तक की यात्रा का संक्षेप में ब्योरा लिख लिया। इस ब्योरे में एक-एक मिनट का हिसाब था। दो अक्तूबर बुधवार की रात के पौने नौ बजे लन्दन से चलने के बाद पेरिस पहुंचने, और पेरिस से तूरिन तक रेल में यात्रा करने के बाद, तूरिन से जहाज में बैठकर स्वेज पहुंचने में कुल साढ़े छः दिन यानी 156 घंटे का समय लगा। अपनी पूरी यात्रा के दौरान मिस्टर फाग इसी तरह एक-एक मिनट का हिसाब लिखते रहे।





4

वे लोग 10 अक्तूबर को स्वेज़ बन्दरगाह से रवाना हुए। जहाज़ जब दूसरे दिन स्वेज़ नहर में से गुज़र रहा था, तब जीन जहाज़ की छत पर यों ही घूमने निकल गया। उसे छत पर मिस्टर फिक्स को खड़ा देखकर आश्चर्य हुआ। लेकिन साथ ही उसे बड़ी खुशी भी हुई। उसने सोचा कि चलो, एक जान-पहचान का आदमी मिला। उसे यह नहीं मालूम था कि यह आदमी कौन है। उसने फिक्स के पास जाकर कहा, 'कहिए जनाब, शायद हम लोग एक-दूसरे को पहचानते हैं ! आपको याद है, हमारी मुलाकात स्वेज़ बन्दरगाह के घाट पर हुई थी। आपका शुभ नाम ?'

फिक्स ने कहा, 'हां, हां मुझे याद आया। शायद तुम उन अंग्रेज़ सज्जन के नौकर हो। उनका नाम क्या मिस्टर फाग है ? मुझे ब्रिटिश राजदूत के दफ़्तर में मालूम हुआ। तुम्हारा नाम क्या है ?'

जीन ने अपना नाम बता दिया। फिर काफी देर तक दोनों इधर-उधर की गप्प करते रहे। थोड़ी ही देर में फिक्स ने मिस्टर फाग के नौकर से अच्छी दोस्ती कर ली।

जहाज़ काफी तेज़ रफ़्तार से चला जा रहा था। स्वेज़ और अदन के बीच की दूरी 1310 मील है। जहाज़ के कार्यक्रम के अनुसार यह दूरी 138 घंटे में पूरी हुई।

जहाज़ ने बाबुलमन्दब के जलडमरूमध्य को पार किया। फिर आगे चलकर उसने एक जगह कोयला लिया और हिन्द महासागर में प्रवेश किया। 20 अक्तूबर को दोपहर के 12 बजे के लगभग जहाज़ से भारत का किनारा दिखाई देने लगा। दो घंटे बाद ही जहाज़ का कप्तान छत पर आ गया और वहां से जहाज़ियों को आदेश देने लगा।

जहाज़ अब द्वीपों के बीच से होकर आगे बढ़ रहा था। इन द्वीपों में एक तरफ बम्बई और सालसेते नामक द्वीप थे और दूसरी तरफ ट्राम्बे, एलीफेण्टा और बुचर नामक द्वीप थे। ठीक साढ़े चार बजे जहाज़ ने बम्बई बन्दरगाह में लंगर डाला। कार्यक्रम के अनुसार जहाज़



22 अक्तूबर को बम्बई पहुंचने वाला था, लेकिन तेज़ रफ़्तार से चलने के कारण 20 अक्तूबर को ही वहां पहुंच गया। इस तरह मिस्टर फाग को दो दिन का लाभ हुआ।

पांच बजते-बजते सभी यात्री जहाज़ से उतर गए। बम्बई से एक गाड़ी कलकत्ता के लिए रात को ठीक आठ बजे रवाना होने वाली थी। मिस्टर फाग भी जल्दी-जल्दी जहाज़ से नीचे उतरे फिर उन्होंने अपने नौकर को हुक्म दिया, 'देखो जीन, मैं यहां से चुंगी दफ़्तर में जाता हूं और अपने वीज़े पर बम्बई की मुहर लगवाता हूं। तुम इस बीच खाने-पीने की चीज़ें और दूसरा ज़रूरी सामान खरीदकर आठ बजने से पहले ही स्टेशन पहुंच जाना।' मिस्टर फाग के जहाज़ से उतरने के बाद ही तुरन्त गुप्तचर फिक्स भी उतरा और फौरन दौड़ता हुआ बम्बई के पुलिस कप्तान के पास गया। उसने पुलिस कप्तान को बैंक की चोरी के बारे में बताया और यह भी बताया कि जिस आदमी का वह पीछा कर रहा है उस पर उसे शक है। उसे यह भी पता चला कि चोर की गिरफ़्तारी का वारण्ट अभी लंदन से नहीं आया था।

फिक्स कुछ मुश्किल में पड़ गया। उसने पुलिस कप्तान से कहा, 'फाग को गिरफ्तार कर लिया जाए, क्योंकि उस पर मुझे पूरा शक है।' लेकिन कप्तान ने यह कहकर इन्कार कर दिया कि जब तक लन्दन से वारण्ट नहीं आयेगा, मिस्टर फाग को गिरफ़्तार नहीं किया जा सकता। अंत में हार कर फिक्स ने मिस्टर फाग का पीछा जारी रखने का निश्चय किया।

उधर जीन ने अपने मालिक की आज्ञा के अनुसार कुछ ज़रूरी चीज़ें खरीदीं। समय अब भी कुछ बाकी था, इसलिए उसने बम्बई शहर देखने का निश्चय किया। उस दिन पारसियों का एक त्यौहार था। जीन काफी देर तक उधर-उधर भीड़-भाड़ में घूमता रहा और फिर मलाबार हिल नामक एक छोटी पहाड़ी पर बसे एक मुहल्ले में एक पारसी मन्दिर के सामने जा पहुंचा। उसे यह नहीं मालूम था कि हिन्दुओं और

पारसियों के मंदिरों में ईसाइयों को नहीं जाने दिया जाता—कम-से-कम जूते पहनकर तो उनमें कोई नहीं घुस सकता।

जीन जूते पहने हुए ही मन्दिर के अन्दर चला गया। मन्दिर बड़ा सुन्दर था। उसकी दीवारों और खम्भों पर बड़ी अच्छी नक्काशी की गई थी। जीन आश्चर्य से यह सब देखता रहा, लेकिन तभी अचानक किसी का धक्का खाकर वह ज़मीन पर आ गिरा। मन्दिर के तीन पुजारियों ने नाराज़ होकर उसे पीटना शुरू कर दिया और उसके जूते-मोज़े निकालकर बाहर फेंक दिए।

जब जीन ने देखा कि उस पर चारों तरफ से हमला हो रहा है तो वह उछलकर उठ खड़ा हुआ। दो पुरोहितों को तो उसने किसी तरह काबू में कर लिया, लेकिन तीसरा पुजारी अब भी उस पर घूंसे बरसा रहा था। अन्त में किसी तरह वह नंगे पैर ही वहां से भागता हुआ बाहर निकल आया। भीड़ से बचते-बचाते जब वह स्टेशन पहुंचा तो बुरी तरह हांफ रहा था। न उसके सिर पर हैट था और न पैरों में जूते। मन्दिर में मारपीट में उसका वह बंडल भी छूट गया था, जिसमें ख़रीदी हुई चीज़ें बंधी थीं।

गुप्तचर फिक्स भी तब तक स्टेशन पहुंच चुका था। जब उसने देखा कि मिस्टर फाग बम्बई से रवाना होने की कोशिश कर रहे हैं, तो उसने भी कलकत्ता तक, और अगर ज़रूरत हुई तो और भी आगे तक उनका पीछा करने का निश्चय किया। उसने एक खंभे की आड़ से सुना कि जीन अपने मालिक को मारपीट की घटना का क़िस्सा बता रहा था। उसकी बात सुनकर मिस्टर फाग ने कहा, 'देखो जीन, इस तरह झगड़ा करना ठीक नहीं है। आगे तुम ऐसा कोई काम मत करना।'

जब गाड़ी चलने लगी तो फिक्स डिब्बे में चढ़ने ही वाला था, लेकिन अचानक उसे एक विचार सूझा और उसने अपनी योजना बदल दी। वह वहीं रुक गया। गाड़ी स्टेशन से बाहर निकल गई।



5

जिस डिब्बे में मिस्टर फाग अपने नौकर के साथ यात्रा कर रहे थे, उसी में ब्रिगेडियर जनरल फ्रांसिस क्रोमार्टी भी यात्रा कर रहे थे। वे स्वेज़ से बम्बई तक की यात्रा में मिस्टर फाग के साथ ही थे और अब अपना काम संभालने के लिए बनारस जा रहे थे।

एक घंटे भर बाद गाड़ी उन पुलों पर से गुज़री, जो बम्बई और सालसेते बन्दरगाहों को भारत की मुख्य भूमि से जोड़ते हैं। इसके बाद रात में पश्चिमी घाट के पहाड़ी इलाके को पार करते हुए गाड़ी नासिक पहुंची। नासिक गोदावरी नदी के मुहाने पर बसा हुआ एक हिन्दू तीर्थ-स्थान है। इसके बाद दूसरे दिन 21 अक्तूबर को उसने ख़ानदेश का पठारी इलाका पार किया और साढ़े बारह बजे तक वह बुरहानपुर जा पहुंची। यहां से जीन ने चप्पल का एक जोड़ा खरीदा, जिस पर नकली मोती टंके थे।

यात्रियों ने जल्दी-जल्दी खाना खाया और गाड़ी नरसिंहपुर के लिए रवाना हुई। कुछ दूर तक वह ताप्ती नदी के किनारे-किनारे चली। शाम होने तक गाड़ी सतपुड़ा पर्वत-श्रेणी को पार करने लगी। यह पर्वत-श्रेणी ताप्ती नदी की घाटी को नर्मदा की घाटी से अलग करती है। इस यात्रा में गाड़ी को कई सुरंगों से पार होना पड़ा।

दूसरे दिन, 22 अक्तूबर को सर फ्रांसिस ने जीन से समय पूछा और जीन ने घड़ी देखकर बतलाया कि 3 बजे हैं। असल में घड़ी 4 घंटे पीछे थी, क्योंकि जब वे लोग इंग्लैण्ड से चले थे तब घड़ी को ग्रीनविच समय के अनुसार मिलाया गया था। अब यहां से इंग्लैण्ड लगभग 77 डिग्री पश्चिम था। हम जैसे-जैसे पूर्व की ओर चलते हैं, घड़ी का समय पीछे होता जाता है। सर फ्रांसिस ने जीन को बताया कि संसार के एक कोने से दूसरे कोने की यात्रा में घड़ी का टाइम हर वक्त क्यों मिलाते रहना पड़ता है।

जनरल ने जीन को समझाया, 'हम लोग तब से अब तक बराबर पूर्व दिशा की ओर, यानी सूर्योदय की दिशा में यात्रा कर रहे हैं, इसलिए हर एक डिग्री पर दिन चार मिनट छोटा होता चलता है।' लेकिन जीन ने उनकी बात को टाल दिया और अपनी घड़ी को लन्दन के समय पर ही बना रहने दिया। मिस्टर फाग अपने नौकर की मूर्खता देखकर हंस पड़े। अन्त में मिस्टर फाग के समझाने पर ही जीन ने घड़ी ठीक की।

दूसरे दिन सवेरे 8 बजे गाड़ी एक घने जंगल में रुक गई, जहां आस-पास थोड़ा जंगल साफ कर दिया गया था। गार्ड ने आकर मुसाफिरों को बताया कि गाड़ी यहां से आगे नहीं जाएगी।

आस-पास कुछ बंगले और कुलियों की झोंपड़ियां बनी हुई थीं। यह जगह माणिकपुर के पास पड़ती है। यहां से इलाहाबाद कुछ मील दूर था। इतनी दूर तक अभी लाइन नहीं बिछ पाई थी। इसके बाद इलाहाबाद के आगे कलकत्ता तक लाइन चली गई थी। दूसरे सभी यात्रियों को यह मालूम था, लेकिन मिस्टर फाग को इसका पता नहीं था। उन्होंने गार्ड से कहा, 'लेकिन अखबारों में तो लिखा था कि बम्बई से इलाहाबाद तक लाइन खुल गई है !'

गार्ड ने कहा, 'जी हां, बात तो ठीक है। लेकिन अभी यहां से इलाहाबाद तक करीब पचास मील लम्बी लाइन का बिछाना बाकी है। आपको यहां से कोई-न-कोई सवारी मिल जाएगी।'

लेकिन तब तक दूसरे यात्रियों ने उस गांव में सवारी के जितने भी साधन मिल सकते थे, उन सबको यात्रा के लिए पक्का कर लिया।

कोई चार पहियों की पालकी गाड़ी में बैठा जिसमें घोड़े जुते थे, किसी ने बैलगाड़ी तय की, किसी ने टट्टू किराये पर लिए और कोई साधारण पालकी में ही चल दिया।

लेकिन मिस्टर फाग और सर फ्रांसिस को कोई भी सवारी नहीं मिली। जीन सवारी की तलाश में गाँव में इधर-उधर घूमने लगा। कुछ देर बाद आकर उसने बताया कि एक आदमी के पास एक हाथी है, जो यात्रा के काम आ सकता है।

मिस्टर फाग और सर फ्रांसिस हाथी के महावत के पास गए और उससे सफर का भाड़ा तय करने लगे। पहले उन्होंने दस पौंड प्रतिघंटा देने को कहा, लेकिन वह राज़ी नहीं हुआ। धीरे-धीरे उन्होंने चालीस पौंड तक बात बढ़ाई, लेकिन फिर भी हाथीवाला उनको ले जाने के लिए राज़ी नहीं हो रहा था। अन्त में मिस्टर फाग ने हाथी को खरीद लेने का निश्चय किया और उसका दाम एक हज़ार पौंड लगाया। लेकिन वह हाथीवाला बड़ा चालाक था। उसे मालूम था कि गांव में अब कोई और सवारी नहीं है और इन मुसाफिरों को जल्दी पड़ी हुई है। वह टस-से-मस नहीं हुआ। अन्त में मिस्टर फाग ने दो हज़ार पौंड देने को कहा और वह आदमी राज़ी हो गया। लेकिन हाथी के साथ चलने के लिए किसी आदमी की ज़रूरत थी। अन्त में एक पारसी युवक तैयार हुआ। लेकिन उसने मुंह मांगा दाम लिया।

मिस्टर फाग ने अपने दो हजार पौंड के नोट निकालकर हाथी वाले को दिए और हाथी को सफर के लिए तैयार करने का हुक्म दिया। हाथी की पीठ पर एक हौदा कसा गया। मिस्टर फाग ने सर फ्रांसिस को भी साथ चलने के लिए कहा। वह राज़ी हो गए। अन्त में रास्ते के लिए खाना वगैरह लेकर सब लोग हाथी पर सवार हुए और 9 बजे के लगभग वहां से आगे चले।

6

हाथी खूब झूमकर चलता है। उसके चलने से उसकी पीठ पर सवार मुसाफिरों को खूब हिचकोले लगते हैं। इन आदमियों ने कभी हाथी की सवारी नहीं की थी। इसलिए उन्हें यह यात्रा बड़ी विचित्र लग रही थी। वे ज्यादा बातचीत भी नहीं कर सकते थे, क्योंकि हाथी के चलने के धक्के से अपने ही दांतों से अपनी ज़बान के कट जाने का डर रहता है।

रात 8 बजे तक हाथी ने जंगल पार कर लिया और वह विन्ध्याचल पर्वत की आखिरी पहाड़ी को पार करके एक टूटे-फूटे बंगले के सामने आ खड़ा हुआ। अब तक लगभग 25 मील की यात्रा पूरी हुई और 25 मील बाकी थे। रात कुछ ठंडी थी। पारसी महावत ने बंगले को झाड़-पोंछकर थोड़ी-सी जगह साफ की और फिर आग जलाई। फिर खा-पीकर सब लोग सो गए। हाथी के लिए हरी पत्तियों का इन्तज़ाम किया गया। मिस्टर फाग ने उसको थोड़ी मिश्री खिलाई।

दूसरे दिन सवेरे छः बजे फिर से यात्रा आरम्भ हुई, क्योंकि महावत शाम तक इलाहाबाद पहुंच जाना चाहता था। दिन में लगभग दो बजे वे लोग एक बहुत ही घने जंगल के बीच पहुंचे। अब तक हाथी बड़े मज़े से चलता आया था, लेकिन कुछ दूर चलने पर वह घबराने लगा और फिर अचानक खड़ा हो गया। उस समय शाम के 4 बजे थे। महावत की समझ में कुछ नहीं आया कि आखिर बात क्या है। महावत ने हाथी को एक बड़े पेड़ के तने से बांध दिया और उसके

आगे कुछ हरी पत्तियां डाल दीं। फिर वे लोग इन्तज़ार करने लगे। इतने में दूर से ढोल और नगाड़ों के बजने और कुछ लोगों के ज़ोर-ज़ोर से नारे लगाने की आवाज़ आने लगी। महावत ने बताया कि ब्राह्मणों का कोई जुंलूस आ रहा है।

थोड़ी देर बाद जुलूस पास आ पहुंचा। जुलूस में आगे-आगे बाजे वाले थे और उनके बाद पुरोहितगण चले आ रहे थे। उनके पीछे लोगों की भीड़ थी, जो कुछ भजन गाते जा रहे थे। उनके बाद एक बड़े से रथ में काली मूर्ति थी। मिस्टर फाग ने ऐसी मूर्ति अपनी ज़िन्दगी में पहली बार देखी थी। मूर्ति के चार हाथ थे। लाल जीभ बाहर निकली हुई और गले में मुंडों की माला थी। सर फ्रांसिस ने मिस्टर फाग को बताया, 'यह काली माता की मूर्ति है, जिसे हिन्दू लोग प्रेम और मृत्यु की देवी मानते हैं। यह आततायियों का नाश करती है।'

मूर्ति के पीछे कुछ साधु चल रहे थे और उनके बाद कुछ ब्राह्मणों की भीड़ के साथ एक स्त्री थी, जो बुरी तरह लड़खड़ा रही थी। यह स्त्री अभी युवती ही थी और बहुत सुन्दर थी। वह सिर से लेकर पांव तक गहनों से लदी थी। देखने में वह कोई रानी मालूम होती थी। इसके बाद नंगी तलवारें और भाले लिए हुए कुछ सिपाही चल रहे थे और उनके बाद कुछ लोग अर्थी को उठाए हुए चल रहे थे। शायद कोई राजा मर गया था और उनकी रानी को लोग सती कराने के लिए ले जा रहे थे।

मिस्टर फाग के पूछने पर सर फ्रांसिस ने उसको बताया, 'अभी आपने जिस युवती को देखा है, उसे उसके पति की लाश के साथ चिता में ज़िन्दा जलाया जायेगा। बुन्देलखंड में सती-प्रथा बहुत अधिक प्रचलित है। वह स्त्री इसलिए लड़खड़ा रही थी कि उसे खूब भांग और अफ़ीम पिलाई गई थी, ताकि वह गहरे नशे में रहे।'

महावत बोला, 'हुज़ूर, यह बहुत बुरी प्रथा है और बहुत से हिन्दू इसके ख़िलाफ़ भी हैं।'

मिस्टर फाग को यह सब सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा, 'क्या हम लोग इस स्त्री को जलाए जाने से बचा नहीं सकते ? हमें इसकी कुछ मदद करनी चाहिए !'

सर फ्रांसिस ने कहा, 'हां, अभी तो बारह घंटे का समय बाकी है। इसको कल सुबह से पहले नहीं जलाया जाएगा। लेकिन इसकी मदद करना एक बहुत बड़ा ख़तरा मोल लेना है। सरकार हमारी ज़रूर



सहायता करेगी, लेकिन ये लोग बिगड़ जायेंगे और इनसे हमें लड़ाई मोल लेनी होगी। इसलिए हम लोगों को ज़रा चालाकी से काम लेना चाहिए।'

महावत ने कहा, 'हुजूर, मैं इसे जानता हूं। यह बम्बई के एक अमीर पारसी व्यापारी की लड़की है और अच्छी पढ़ी-लिखी है। यह अंग्रेजी भी बोलती है। असल में माता-पिता के मरने पर जब यह अनाथ हो गई तो इसके रिश्तेदारों ने ज़बरदस्ती उसका विवाह एक बूढ़े राजा के साथ कर दिया, वह बुन्देलखंड की एक छोटी-सी रियासत का राजा था। शादी के तीन महीने बाद ही वह विधवा हो गई। यह जानती थी कि लोग इसको सती करेंगे। इसलिए यह राजमहल से भाग निकली। लेकिन राजा के आदमियों ने इसको फिर से पकड़ लिया और अब इसका बचना मुश्किल है।

महावत की बात सुनकर मिस्टर फाग और सर फ्रांसिस ने उस स्त्री को बचाने की तरकीब सोचनी शुरू की। कुछ देर वहीं रुकने के बाद वे लोग चुपके-चुपके उसी रास्ते से आगे बढ़ने लगे, जिधर से जुलूस गया था। महावत को मालूम था कि किस जगह रानी को सती किया जाएगा, इसलिए वह बड़े आराम से हाथी को हांक रहा था।

अंधेरा होते-होते वे लोग ऐसी जगह पहुंचे जहां से कुछ दूर पर एक बड़ा-सा मन्दिर था। इसी मन्दिर के पास रानी को सती किया जाने वाला था। इस समय जुलूस के लगभग सभी लोग मन्दिर में चले गए थे और रात बिताने की तैयारी में लग गये थे। महावत ने भी हाथी को एक जगह पेड़ों के झुण्ड के पीछे छिपाकर बांध दिया था। फिर मन्दिर के पास ही तीनों छिपकर बैठ गए और सवेरा होने का इन्तज़ार करने लगे।

सुबह मुंह अंधेरे ही जब लोग रानी को लेकर धूमधाम के साथ मन्दिर से निकले तो वे तीनों चुपके-चुपके उनका पीछा करने लगे। कुछ दूर पहुंचने पर उन्होंने देखा कि लकड़ियों की एक बड़ी-सी चिता बनी

हुई है। लकड़ियों को खूब तेल पिलाया गया था, ताकि आग लगते ही वे भभक उठें। पहले पुरोहित ने चिता की पूजा की और फिर राजा की लाश को चिता पर रख दिया।

रानी इस समय लगभग बेहोश थी। उसको भी उठाकर चिता पर बिठा दिया गया। चिता इतनी ऊंची थी कि उसके पीछे कोई आदमी आसानी से छिप सकता था। महावत ने इन लोगों को बता दिया था कि चिता में आग लगते ही कुछ लोग लम्बे-लम्बे बांस लेकर चिता को घेर लेंगे और अगर रानी उसमें से भागने की कोशिश करेगी तो उसे बांसों से ठेलकर आग में झोंक दिया जाएगा।

अभी तक लोगों ने चिता को घेरा नहीं था। सब लोग एक तरफ भीड़ लगाए खड़े थे। जीन लोगों की नज़र बचाकर चिता के पीछे जा छिपा। थोड़ी देर बाद एक पुरोहित जलती हुई मशाल लेकर आगे बढ़ा और उसने चिता में आग लगा दी। चिता जैसे ही जलने लगी कि जीन लपककर ऊपर चढ़ गया और उसने रानी को अपने हाथों में उठा लिया।

लोगों ने समझा कि राजा भूत बनकर रानी को उठाकर चिता के बाहर निकल आया है। अंधेरे की वजह से लोग जीन को पहचान नहीं सके। भीड़ के लोग 'भूत-भूत' चिल्लाकर पीछे हटने लगे और उनमें भगदड़ मच गई। इसी बीच जीन रानी को उठाकर वहां से भाग निकला। मिस्टर फाग और उनके साथी भी वहां से भाग निकले।

थोड़ी ही देर में वे लोग वहां पहुंच गए, जहां हाथी बंधा था। महावत ने हाथी को नीचे बैठने के लिए कहा। जैसे ही हाथी नीचे बैठा, जीन ने रानी को हौदे के एक कोने में लिटा दिया। बाकी सब लोग भी जल्दी-जल्दी सवार हो गए। महावत हाथी की गर्दन पर बैठा और हाथी को खड़ा होने के लिए अपने अंकुश से इशारे करने लगा। हाथी के खड़ा होते ही उसने उसको तेज़ रफ्तार से हांक दिया।

कुछ ही देर में ये लोग काफी दूर निकल गए। रानी अब तक

बेहोश थी। कुछ घंटे की यात्रा के बाद महावत ने बताया कि अब इलाहाबाद दो मील दूर रह गया है। मिस्टर फाग ने जीन से कहा, 'जीन, हम लोग सीधे स्टेशन पहुंचेंगे और तुम शहर में जाकर रानी के लिए अंग्रेज़ औरतों के लायक कपड़े खरीद लाना।

इधर सर फ्रांसिस रानी को होश में लाने की कोशिश कर रहे थे। थोड़ी देर बाद रानी ने अपनी आंखें खोली। वह अपने को हाथी के ऊपर अजनबियों के बीच पाकर बहुत घबराई, लेकिन वह अंग्रेजी जानती थी। सर फ्रांसिस ने उसको थोड़े में सारा किस्सा कह सुनाया।

रानी की आंखों में खुशी के आंसू आ गए। उसने सब लोगों को बहुत धन्यवाद दिया और बताया कि उसका नाम अबदा है। और वह जल्दी-से-जल्दी भारत के बाहर भाग जाना चाहती है, क्योंकि अगर वह यहां रही तो राजा के आदमी उसका पता लगा लेंगे और उसकी बड़ी दुर्गति होगी। वह भागकर हांगकांग जाना चाहती थी। जब मिस्टर फाग ने उसे बताया कि वे भी कलकत्ता होकर हांगकांग जाएंगे तो वह उनके साथ जाने को राज़ी हो गई।

इलाहाबाद पहुंचने पर लोग शहर के बाहर ही कुछ देर रुके रहे। इस बीच जीन शहर में गया और रानी के लिए अंग्रेज़ स्त्रियों के लायक कुछ अच्छे-अच्छे कपड़े खरीद लाया। रानी ने जब इन कपड़ों को पहना तो वह देखने में बिलकुल किसी अंग्रेज़ लेडी जैसी लगने लगी।

इलाहाबाद स्टेशन पर पहुंचकर मिस्टर फाग ने महावत से कहा, 'देखो भाई, तुमने हमारा बड़ा काम निकाला है। जैसा कि तय हुआ था, तुम अपना मेहनताना ले लो और हाथी को भी लेते जाओ। हमें इसकी ज़रूरत नहीं है।' महावत की तो खुशी की सीमा नहीं रही। उसने झुककर सलाम किया। फिर वह अपना हाथी लेकर वहां से चल दिया।

प्लेटफार्म पर पहुंचकर जीन ने पता लगाया कि कलकत्ता के लिए गाड़ी छूटने में अभी थोड़ी देर है। सब लोगों ने होटल में खाना खाया और फिर आगे की योजना बनाने लगे। रानी अब भी कुछ-कुछ घबराई

हुई थी और बार-बार चौंक पड़ती थी। वह डर रही थी कि कहीं कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है। उधर मिस्टर फाग भी चिन्तित थे, क्योंकि उनकी यात्रा का कार्यक्रम कुछ गड़बड़ा गया था और इलाहाबाद पहुंचने में उन्हें डेढ़ दिन की देर हो गई थी।

कुछ देर बाद गाड़ी आई और सब लोग सवार हो गये। सर फ्रांसिस बनारस में ही उतरने वाले थे। करीब साढ़े बारह बजे गाड़ी बनारस पहुंची। प्लेटफार्म पर सर फ्रांसिस का स्वागत करने के लिए काफी तादाद में सिपाही जमा थे। सबने उनको सलामी दी। फिर सर फ्रांसिस ने मिस्टर फाग और उनके साथियों से हाथ मिलाया और विदा ली। गाड़ी बनारस स्टेशन को छोड़कर आगे बढ़ी।

चौबीस घण्टे बाद सवेरे सात बजे गाड़ी कलकत्ता पहुंची। हांगकांग के लिए स्टीमर दोपहर में रवाना होने वाला था। इस तरह अभी पांच घण्टे का समय बाकी था। कलकत्ता उस समय भारत की राजधानी थी। सब लोगों ने घूम-घामकर शहर देखने का निश्चय किया। रानी ने इसका विरोध किया, क्योंकि उसको डर था कि कहीं कोई उसको देख न ले और उसका पीछा न करने लगे। इसलिए अन्त में यह तय हुआ कि कुछ समय तक स्टेशन पर ही रुका जाए और फिर सीधे यहां से बन्दरगाह के लिए रवाना हुआ जाए।



7



जब वे लोग कलकत्ता स्टेशन से बन्दरगाह के लिए रवाना होने लगे तो अचानक एक सिपाही ने आकर मिस्टर फाग से पूछा, 'मेरा ख़्याल है आप ही मिस्टर फाग हैं और शायद यह आपका नौकर जीन है। ज़रा आप लोगों को मेरे साथ चलना पड़ेगा।'

मिस्टर फाग कुछ चौंके, फिर उन्होंने कहा, 'यह लेडी भी हमारे साथ है। इसको यहां अकेले नहीं छोड़ा जा सकता।'

सिपाही ने कहा, 'हां, हां, इनको भी साथ ले लीजिए।'

सिपाही तीनों को चार पहियों की एक पालकी गाड़ी में बिठाकर ले चला। रास्ते-भर कोई कुछ नहीं बोला। बीस मिनट बाद गाड़ी कचहरी के पास जाकर रुकी। सिपाही उन लोगों को एक कमरे में ले गया, जिसकी खिड़कियों में लोहे की छड़ें लगी हुई थीं। उसने कमरे में उनको बिठाते हुए कहा, 'साढ़े आठ बजे आप लोगों को मजिस्ट्रेट साहब के सामने पेश किया जाएगा।' यह कहकर वह चला गया और बाहर से दरवाज़ा बन्द कर दिया।

साढ़े आठ बजे उसने फिर दरवाज़ा खोला और उन लोगों को पास के एक कमरे में चलने के लिए कहा। यह अदालत का कमरा था और इसमें हिन्दुस्तानी और अंग्रेज कई तरह के लोग भरे हुए थे। नाम पुकारे जाने पर मि. फाग और जीन मजिस्ट्रेट के सामने खड़े हुए। मजिस्ट्रेट ने कहा, 'पिछले दो दिनों से बम्बई से आने वाली गाड़ियों में तुम लोगों की खोज की जा रही है। तुम लोगों के ख़िलाफ़ एक मामला है।' फिर उसने एक दरवाज़े की तरफ इशारा किया। दरवाज़ा खुला और उसमें से तीन पारसी पुरोहित भीतर आए।

उनको देखकर जीन बड़बड़ाया, 'ओह, अब मेरी समझ में आया। ये तो शायद बही बदमाश हैं, जो रानी को ज़िन्दा जलाना चाहते थे।'

पुरोहित मजिस्ट्रेट के सामने सीधे खड़े रहे। मुंशी ने आरोप पढ़कर सुनाया, जिसमें कहा गया था कि मिस्टर फाग और उनके नौकर ने एक पारसी मन्दिर को अपवित्र किया।

मजिस्ट्रेट ने कहा, 'तुम लोगों ने आरोप सुना ?'

मिस्टर फाग ने अपनी घड़ी की ओर देखते हुए कहा, 'जी, हां, और मैं इसे स्वीकार भी करता हूं।' उन्होंने सोचा कि शायद वह सती वाला मामला है। लेकिन तभी मुंशी ने एक जोड़ा जूता अदालत में पेश करते हुए कहा, 'इनमें से यह आदमी अपने ये जूते मन्दिर में छोड़कर भागा था।'

अपने जूते देखकर जीन अचानक बोल उठा, अरे, ये तो मेरे जूते हैं !' बात यह थी कि मालिक और नौकर दोनों बम्बई की उस घटना को भूल चुके थे, जिसमें जीन जूते पहनकर एक पारसी मन्दिर में घुस गया था।

गुप्तचर मिस्टर फिक्स ने इस घटना से लाभ उठाया और उस मन्दिर के पुरोहितों से बातचीत की और फिर उनको दूसरे दिन की गाड़ी से कलकत्ता रवाना कर दिया। मिस्टर फाग को तो जंगल में देरी हो गई और पुरोहित लोग गुप्तचर के साथ कलकत्ता पहुंच गए।

जब मिस्टर फाग ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया तो मजिस्ट्रेट ने कहा, 'अंग्रेजी कानून के मुताबिक भारत में यहां के निवासियों के धार्मिक अधिकार सुरक्षित हैं। उनके मन्दिरों को अपवित्र करना एक जुर्म है। मैं जीन को 20 अक्तूबर को बम्बई में मलाबार हिल स्थित एक पारसी मन्दिर को अपवित्र करने के आरोप में 15 दिन की जेल और तीन हजार रुपये जुर्माने की सज़ा देता हूं। हालांकि इसके

मालिक के ख़िलाफ़ कोई सबूत नहीं है, लेकिन फिर भी वह अपने नौकर की करतूतों के लिए जिम्मेदार हैं। इसलिए मैं मिस्टर फाग को आठ दिन की जेल और डेढ़ हजार रुपये जुर्माने की सज़ा देता हूं।'

मिस्टर फाग ने कहा, 'हुजूर, मैं अपनी और अपने नौकर की ज़मानत देना चाहता हूं।'

मजिस्ट्रेट ने उनकी बात मान ली। फिक्स एक कोने में खड़ा अदालत की कार्रवाई देख रहा था। उसने सोचा था कि इस तरह इन दोनों आदमियों को कलकत्ता रुकना पड़ जाएगा और तब तक इनकी गिरफ़्तारी का वारण्ट भी आ जाएगा, लेकिन जब उसने मजिस्ट्रेट को ज़मानत की प्रार्थना स्वीकार करते हुए सुना तो वह घबरा गया। इसी बीच मजिस्ट्रेट ने मिस्टर फाग से कहा, 'आप लोग परदेशी और अजनबी हैं, इसलिए दस हज़ार रुपये की ज़मानत देनी पड़ेगी।'

'यह लीजिए दस हज़ार रुपये।' मिस्टर फाग ने झोले में से नोटों का बंडल निकालकर मजिस्ट्रेट के सामने रख दिया। अदालत के बाहर आकर मिस्टर फाग ने एक गाड़ी किराये पर ली और फिर सब लोग उसमें सवार होकर सीधे बन्दरगाह की ओर चल दिए। गुप्तचर भी उनका पीछा करने लगा। बन्दरगाह से कुछ दूर 'रंगून' नाम का जहाज़ खड़ा था। वह रवाना होने ही वाला था कि मिस्टर फाग ने एक नाव बुला ली और नाव में बैठकर सब लोग जहाज़ की तरफ रवाना हो गए। यह देखकर फिक्स मारे गुस्से के हाथ मलता रह गया। उसने अपने मन में कहा, 'बड़ा तेज़ आदमी मालूम होता है बिलकुल चोरों की तरह ही धन लुटा रहा है !' अन्त में फिक्स को भी उन लोगों का पीछा करने के लिए जहाज़ में सवार होना पड़ा।

जहाज़ में बैठने के लिए रवाना होने के पहले मिस्टर फिक्स ने अपने साथी गुप्तचरों से कहा कि जब लन्दन से मिस्टर फाग की गिरफ़्तारी का वारण्ट मिले तो उसे हांगकांग भेज दिया जाए।

यह जहाज़ भारत, चीन और जापान के बीच चला करता था।

यात्रा के पहले भाग में कोई विशेष बात नहीं हुई। मिस्टर फिक्स को हांगकांग में ही वारण्ट मिलने की आशा थी। हांगकांग में भी अंग्रेज़ों का राज्य था। इसलिए वहां मुजरिमों को पकड़ना मुश्किल नहीं था। बीच में सिंगापुर भी पड़ता था, लेकिन वहां जहाज़ बहुत थोड़ी देर के लिए ही रुकता था। इस बार फिक्स ने तय किया कि मिस्टर फाग को हांगकांग से आगे नहीं बढ़ने दिया जाएगा।

उसने सिंगापुर से हांगकांग के अधिकारियों को तार करके 'रंगून' नामक जहाज के पहुंचने की सूचना दे दी। फिर उसने जीन से बातचीत करने और आगे का किस्सा मालूम करने की कोशिश शुरू की। 31 तारीख़ को जीन जहाज़ की छत पर टहल रहा था। वहां गुप्तचर से उसकी भेंट हो गई। फिक्स ने भी ऐसा मुंह बनाया जैसे वह भी जीन को वहां देखकर आश्चर्य कर रहा हो।

जीन ने कहा, 'कहिए मिस्टर फिक्स, आप यहां कैसे ? आपको तो हम लोगों ने बम्बई में छोड़ा था ! क्या आप भी हांगकांग जा रहे हैं ? क्या आपने भी पूरी दुनिया का चक्कर लगाने का निश्चय किया है ?'

फिक्स ने कहा, 'नहीं, नहीं, बस मुझे हांगकांग तक जाना है। वहां मैं कुछ दिन ठहरना चाहता हूं।'

इसके बाद बातचीत के दौरान जीन ने फिक्स को बताया कि इस बार एक सुन्दर युवती भी उसके साथ यात्रा कर रही है। फिर उसने अब तक का सारा किस्सा गुप्तचर को बता दिया कि किस तरह वह बम्बई में एक मन्दिर में घुस गया था, फिर रास्ते में उन लोगों ने इस स्त्री को सती होने से बचाया था और फिर कलकत्ता में उन लोगों पर मुकदमा चला और वे लोग ज़मानत पर छूटे हैं।

यात्रा के अन्तिम दिनों में मौसम बड़ा ख़राब रहा। जब वे लोग कैण्टन नदी के मुहाने में पहुंचे तो काफी तेज़ हवा चल रही थी। इसी मुहाने में आगे चलकर हांगकांग का बन्दरगाह स्थित है। आंधी-तूफान

की वजह से जहाज़ को हांगकांग से कुछ दूर काफी समय तक खड़ा रहना पड़ा। जहाज़ को 5 तारीख की शाम को हांगकांग पहुंच जाना चाहिए था, लेकिन वह 6 तारीख को सुबह पहुंचा।

जब जहाज़ बन्दरगाह की तरफ बढ़ने लगा तो उसका कप्तान ऊपर छत पर निकल आया और वहीं से जहाज़ियों को आदेश देने लगा। उस समय सभी लोग छत पर जमा थे। मि. फाग ने कप्तान से योकोहामा जानेवाले अगले जहाज़ के बारे में पूछा। कप्तान ने कहा, 'आप लोगों को कल सवेरे कथे नामक जहाज़ मिल जाएगा।' गुप्तचर फिक्स भी वहीं पास में खड़ा था और सब कुछ सुन रहा था।

जहाज़ घाट से लग गया और यात्री उतरने लगे। अभी मिस्टर फाग के पास 16 घंटे का समय बाकी था। इस बीच वे आसानी से रानी को उसके परिचित लोगों के पास पहुंचा सकते थे। वे लोग पालकियों में बैठकर रवाना हुए और एक बड़े होटल में पहुंचे। वहां रानी को ठहराकर और जीन को उसकी देखरेख के लिए छोड़कर मिस्टर फाग शहर में घूमने के लिए निकले। वे रानी के सम्बन्धियों का पता लगाना चाहते थे। होटल में ही पूछताछ करने पर उन्हें हांगकांग के बड़े-बड़े पारसियों के पते मालूम हो गए। इन्हीं लोगों में रानी के चचेरे भाई का पता लगाना था।

लेकिन पता लगाने पर मालूम हुआ कि रानी अबदा का भाई हाल में ही हालैण्ड चला गया है। जब मिस्टर फाग ने लौटकर अबदा को बताया तो वह बड़े सोच में पड़ गई। अन्त में उसने मिस्टर फाग से कहा, 'आपकी राय में मुझे क्या करना चाहिए ?'

फाग ने कहा, 'कुछ नहीं, तुम्हें यूरोप जाना चाहिए। तुम हमारे साथ चली चलो। मेरे पास अभी काफी रुपये हैं।' फिर उन्होंने जीन को हुक्म दिया, 'जाओ, जहाज पर तीन कमरे तय करा लो।'

जीन जब जहाज़ कम्पनी के दफ्तर के पास पहुंचा, तो उसने देखा कि जापान जानेवाला जहाज़ जहां खड़ा होता था, उसके पासवाले घाट

पर फिक्स टहल रहा था। उसको देखकर जीन ने ख़ुशी से कहा, 'वाह, मिस्टर फिक्स, तो क्या आप भी जापान जा रहे हैं ? लगता है आपने भी यात्रा पूरी करके अमेरिका जाने का तय किया है ?'

फिक्स कुछ चिढ़ गया और बोला, 'हां, अभी तो यही तय किया है।'

'तो आइए चलिए, हम लोग जहाज़ में कमरे रिज़र्व करा लें।' जीन ने कहा। फिर दोनों आफिस में गए और कमरों के बारे में बातचीत करने लगे। फिक्स अब तक अपना धैर्य खो बैठा था। इतने दिनों से वह इन लोगों का पीछा कर रहा था। लेकिन अभी तक उसे काम की कोई बात मालूम नहीं हो सकी थी। उसने तय किया कि आज जीन से कुछ मालूम करने की कोशिश की जाए। इसलिए उसको अपने साथ एक होटल में नाश्ता करने को कहा। जीन राज़ी हो गया।

इस होटल में लोग अफीम भी पिया करते थे। लम्बे-लम्बे हुक्कों में अफीम को रखकर लोग पीते थे और जब वे नशे में धुत हो जाते थे तो होटल के नौकर उन लोगों को उठाकर बिस्तरों पर लिटा देते थे। हांगकांग में इस तरह के कई होटल थे। फिक्स जीन को अपने साथ एक कोने में ले गया। फिर उसने नौकर को कुछ शराब लाने के लिए कहा। काफी देर तक इधर-उधर की बातें करते रहे। अन्त में अचानक फिक्स ने कहा, 'मुझे तुमसे कुछ खास बात करनी है। मैं तुम्हारे मालिक के बारे में कुछ जानना चाहता हूं। शायद तुम्हें यह मालूम नहीं है कि मैं पुलिस का एक गुप्तचर हूं और लन्दन से भेजा गया हूं।'

जीन ने आश्चर्य से पूछा, 'आप पुलिस के गुप्तचर हैं !'

'हां, यह देखो मेरा गुप्त परिचय-पत्र।' यह कहकर फिक्स ने उसको अपनी जेब से एक कागज़ निकालकर दिखा दिया। उस पर लन्दन की ख़ुफ़िया पुलिस के कार्यालय की मुहर लगी थी। जीन यह देखकर घबरा गया। फिक्स कहने लगा, 'तुम्हें शायद यह मालूम नहीं

है, मिस्टर फाग बड़े धूर्त आदमी हैं। वे तुमको और अपने क्लब के साथियों को धोखा दे रहे हैं। सुनो, मैं तुम्हें एक बात बताता हूं। पिछले सितम्बर को बैंक ऑफ इंग्लैण्ड में चोरी हुई थी और एक आदमी 55 हज़ार पौंड के नोट चुरा ले गया था। उसका जो हुलिया बताया जाता है, वह हूबहू तुम्हारे मालिक से मिलता-जुलता है।'

यह सुनकर जीन को बड़ा गुस्सा आ गया। उसने अपने सामने की टेबल पर ज़ोर से मुक्का मारकर कहा, 'नहीं, यह सब ग़लत है। तुम्हारी बात में कोई दम नहीं है। मेरे मालिक एक ईमानदार आदमी हैं और हमेशा ईमानदारी से रहे हैं !'

फिक्स ने कहा, 'भला तुम्हें यह सब कैसे मालूम हो सकता है ! तुम्हें तो उन्होंने उसी दिन नौकर रखा, जिस दिन वे लन्दन से रवाना हुए। तुमने देखा ही है कि उन्होंने अपने साथ कोई सामान नहीं लिया ताकि भागने में आसानी हो। उनका झोला नोटों से भरा हुआ है और इस पर भी तुम उनको ईमानदार आदमी कहे जा रहे हो ! अगर तुम्हें भी उनके साथी के रूप में गिरफ्तार कर लिया जाए तो कैसा रहे ! क्या तुम्हें यह अच्छा लगेगा ?'

जीन की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह अपना माथा थामकर बैठा रहा। वह सोच रहा था कि मिस्टर फाग जैसा भला आदमी, जो मौका पड़ने पर दूसरों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहता है और जिसने अबदा को बचाया है, भला वह चोर कैसे हो सकता है ! अन्त में वह बोला, 'लेकिन फिक्स आप मुझसे क्या चाहते हैं ? मुझे क्या करना चाहिए ?'

'मैं अब तक मिस्टर फाग का पीछा करता आ रहा हूं। मैंने उनकी गिरफ़्तारी के लिए लन्दन से वारण्ट मंगाया है। वारण्ट यहां आता ही होगा। इसलिए तुम उनको हांगकांग में ही कुछ दिनों तक रोके रखने की कोशिश करो।'

जीन बोला, 'बिलकुल नहीं ! अगर आप जो कह रहे हैं, वह सही

भी हो, तो भी मैं आपकी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि अभी-भी मैं मिस्टर फाग का नौकर हूं। उन्होंने मेरे साथ बड़ी भलमनसाहत बरती है। इसलिए मैं उनको धोखा नहीं दे सकता।'

'खैर, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। अच्छा लो, शराब तो पियो।'

यह कहकर फिक्स ने शराब ढालनी शुरू की। बात-बात में ही उसने जीन को काफी शराब पिला दी। थोड़ी देर में जीन नशे में धुत हो गया। फिक्स तो यही चाहता था। वह उसको उसके मालिक से अलग करना चाहता था। उसने होटल के नौकर को इशारा किया। नौकर ने जीन को बिस्तर पर लिटा दिया।

होटल से चलते समय फिक्स ने अपने मन में कहा, चलो झंझट खत्म हुआ। यह यहां पड़ा रहेगा और इसके मालिक को पता ही नहीं चलेगा कि जहाज़ के रवाना होने का समय बदल गया या बहुत मुमकिन है कि वह इसको यहीं छोड़कर जहाज़ से आगे के लिए रवाना हो जाए।



8

उधर मिस्टर फाग को इसका कुछ पता नहीं था। वे हांगकांग की अंग्रेज बस्ती में घूम रहे थे। अबदा भी उनके साथ थी। अबदा ने मिस्टर फाग के साथ यूरोप जाने का निश्चय कर लिया था। इसलिए यात्रा के लिए कुछ जरूरी चीज़ें खरीदने की उसे फिक्र थी। अब तक वे लोग कई दुकानें देख चुके थे और बहुत-सी चीज़ें खरीद चुके थे।

बाज़ार से लौटकर मिस्टर फाग और अबदा ने होटल में खाना खाया। इसके बाद अबदा अपने कमरे में चली गई। मिस्टर फाग लन्दन के 'टाइम्स' और दूसरे अखबारों की पिछले दिनों की प्रतियां उलटने लगे। शाम तक उनका नौकर वापस लौटकर नहीं आया। लेकिन इसकी उन्हें विशेष चिन्ता नहीं थी। वे जानते थे कि जहाज़ कल से पहले योकोहामा के लिए रवाना नहीं होगा। इसलिए रात-भर उन्हें कोई चिन्ता नहीं हुई। लेकिन सवेरे भी जब जीन लौटकर नहीं आया तो मिस्टर फाग को बड़ा आश्चर्य हुआ।

लेकिन इससे मिस्टर फाग घबराए नहीं। उन्होंने अपना सामान तैयार किया और अबदा से तैयार होने के लिए कह दिया। फिर दोनों पालकी में बैठकर बन्दरगाह के लिए रवाना हो गए।

आधे घण्टे में वे लोग घाट पर पहुंच गए। मिस्टर फाग को आशा थी कि जीन वहीं घाट पर मिल जाएगा। लेकिन वहां जाने पर पता चला कि जहाज़ कल शाम को ही रवाना हो चुका था और जीन अब तक गायब था। लेकिन मिस्टर फाग ऐसी घटनाओं से घबराने वाले आदमी नहीं थे। जब अबदा ने कुछ चिन्तित होकर उनकी तरफ देखा तो उन्होंने शांति से उत्तर दिया, 'कोई बात नहीं है, यात्रा में इस तरह की छोटी-मोटी दुर्घटनाएं तो होती ही हैं।'

इतने में एक आदमी, जो दूर से उन लोगों को देख रहा था, उनके पास आ पहुंचा। यह गुप्तचर फिक्स ही था। फिक्स ने कहा, 'कहिए महाशय, आप भी तो शायद मेरी तरह 'रंगून' जहाज़ से कल यहां पहुंचे हैं ? मैंने सोचा था कि शायद आपके नौकर से यहां मुलाकात हो जाएगी।' मिस्टर फाग ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया, 'जी हां, मैं उसी जहाज़ से आया हूं। जीन न जाने कहां चला गया !'



इस बीच अबदा फिक्स के साथ बातें करने लगी, 'क्या आप हमारे नौकर को जानते हैं ? वह कल से ही गायब...'

गुप्तचर ने आगे पूछा, 'अच्छा ! यह तो बताइए कि क्या आप लोग भी इसी जहाज़ से यात्रा करने वाले थे। मैं तो इसी से जाने वाला था, लेकिन जहाज़ चला गया। बात असल में यह है कि जहाज़ की मरम्मत का काम समय से पहले ही खत्म हो गया। वह बारह घंटे पहले ही हांगकांग के लिए रवाना हो गया। अब तो हम लोगों को अगले जहाज़ के लिए कम-से-कम आठ दिन का इन्तज़ार करना पड़ेगा।'

गुप्तचर ने सोचा कि इस तरह भ्रम में डालकर मैं मिस्टर फाग को एक हफ्ते तक हांगकांग में रोक सकूंगा। लेकिन मिस्टर फाग ने शांति से उत्तर दिया, 'वाह, क्या जापान के लिए यहां से कोई और जहाज़ मिलेगा ही नहीं !' यह कहकर उन्होंने अबदा का हाथ थामा और बन्दरगाह के दूसरे घाटों की ओर चल दिए।

लगभग तीन घंटे तक मिस्टर फाग हांगकांग के घाटों पर घूमते रहे और जहाज़ों के बारे में पता लगाते रहे। लेकिन उस समय कोई जहाज़ जापान नहीं जा रहा था। उन्होंने यह भी कोशिश की कि कोई छोटा जहाज़ सिर्फ उनको और अबदा को योकोहामा तक पहुंचाने के लिए राज़ी हो जाए तो वे उसका पूरा किराया दे देंगे। लेकिन कोई भी जहाज़ खाली नहीं था।

जब मिस्टर फाग इसी तरह इधर-उधर भटक रहे थे तो अचानक उनकी मुलाकात एक स्टीमर के कप्तान से हो गई। कप्तान को उन्होंने अपना किस्सा बताया। वह बोला, 'अरे साहब, आप मज़ाक कर रहे हैं ? भला सिर्फ आपको लेकर कौन-सा जहाज़ यहां से योकोहामा को रवाना होगा। जहाज़ का खर्च आप दे नहीं सकेंगे। मेरे पास एक छोटा स्टीमर जरूर है, लेकिन उससे भी इतनी लम्बी यात्रा नहीं की जा सकती। एक तो मौसम अच्छा नहीं है, दूसरे स्टीमर हल्का है। इस यात्रा में बड़ा संकट है। आप कहते हैं कि आपको 14 तारीख तक योकोहामा

पहुंचना है ताकि वहां से आपको सान फ्रांसिस्को के लिए जहाज़ मिल सके।'

मिस्टर फाग ने कहा, 'हां भाई, ठीक है, मैं सब जानता हूं, लेकिन मुझको ठीक समय पर योकोहामा से सान फ्रांसिस्को का जहाज़ पकड़ना है। अगर तुम अपने स्टीमर से मुझे पहुंचा दो तो मैं सौ पौंड प्रतिदिन के हिसाब से तुमको किराया दूंगा, और वहां ठीक समय पर पहुंचने पर दो सौ पौंड इनाम और दूंगा !'

कप्तान कुछ देर तक सोचता रहा और बोला, 'नहीं साहब, यह यात्रा सम्भव नहीं है। मैं अपनी और अपने यात्रियों की जान ख़तरे में नहीं डालना चाहता। योकोहामा हांगकांग से 1650 मील दूर है। इतनी लम्बी यात्रा किसी छोटे जहाज़ से नहीं की जा सकती। लेकिन आप एक दूसरा रास्ता भी पकड़ सकते हैं। मेरा स्टीमर आपको कैंटन या शंघाई तक पहुंचा सकता है। वहां से आपको सान फ्रांसिस्को के लिए सीधे जहाज़ मिल जाएगा।'

'नहीं, मुझे योकोहामा से जहाज़ मिलेगा, शंघाई से नहीं मिल सकेगा।'

'लगता है, महाशयजी, आपको ठीक से पता नहीं है। सुनिए, जो जहाज़ आप योकोहामा में पकड़ना चाहते हैं, वह असल में योकोहामा से रवाना नहीं होता है, बल्कि वह तो वहां पर रुकता भर है। वह असल में चलता है शंघाई से ही।'

मिस्टर फाग ने प्रसन्न होकर कहा, 'अच्छा ! तुम्हें ठीक से मालूम है न ? तब तो ठीक है, तुम एक घंटे के भीतर ही यात्रा के लिए तैयार हो जाओ। लो, यह दो सौ पौण्ड पेशगी लो और ज़रूरी सामान फौरन ख़रीद लाओ।' रुपये लेकर कप्तान यात्रा की तैयारी करने के लिए चला गया।

इधर फिक्स बड़ा परेशान था। जासूसी की तो सारी योजना असफल हो गई। वह कोई तरकीब निकालना चाहता था। मिस्टर फाग

थोड़ी देर के लिए पुलिस के दफ्तर में गए। वहां उन्होंने अपने नौकर के गायब होने की रपट लिखाई, उसका हुलिया बताया और इतना रुपया जमा कर दिया जो उसको लन्दन पहुंचाने के लिए काफी था।

ठीक तीन बजे स्टीमर मिस्टर फाग और अबदा को लेकर हांगकांग से रवाना हुआ। वह किनारे के पास ही चलता रहा। स्टीमर में यात्रा करने में अबदा को बड़ा आनन्द आ रहा था।

दूसरे दिन सवेरे 8 नवम्बर को कप्तान ने बताया कि स्टीमर हांगकांग से 120 मील दूर आगे आ चुका है। अभी 800 मील की यात्रा बाकी थी। अब वे लोग चीन समुद्र में थे। यहां यात्रा कुछ कठिन हो जाती थी, क्योंकि इस समुद्र में कभी-भी तूफान आ सकता था और मौसम ख़राब हो सकता था।

दूसरे दिन सवेरे लगभग 8 बजे स्टीमर एक तूफान में फंस ही गया। बहुत तेज़ हवा चल रही थी और पानी भी बरस रहा था। स्टीमर इतना हल्का था कि साधारण-सी लहरों में इधर-से-उधर उछल जाता था। दोपहर एक तूफान ने बन्द होने का नाम तक नहीं लिया। स्टीमर का आगे बढ़ना मुश्किल हो रहा था। लेकिन कप्तान बड़ा कुशल था, वह ज़रा भी नहीं घबराया और शांति से उसे आगे बढ़ाता रहा।

रात-भर तूफान चलता रहा। लेकिन स्टीमर भी अपनी रफ़्तार में बढ़ता रहा। यहां तक कि दूसरे दिन दोपहर में स्टीमर शंघाई के पास जा पहुंचा। अब सिर्फ सौ मील की यात्रा बाकी थी। स्टीमर की रफ़्तार तेज़ कर दी गई।

स्टीमर अभी बन्दरगाह से तीन मील दूर था। लेकिन वहीं से कप्तान ने देखकर बताया कि वह जहाज़ बन्दरगाह छोड़कर आगे बढ़ रहा है। उसकी चिमनी से काला धुआं ऊपर उठता हुआ दिखाई दे रहा था। मिस्टर फाग ने कहा, 'यह तो बड़ी गड़बड़ हुई। जहाज़ अगर निकल गया तो उसको पकड़ना कठिन होगा। तुम ज़रा किसी तरह यहां से संकेत करके जहाज़ को रोकने की कोशिश करो।'

कप्तान ने स्टीमर का झंडा आधे मस्तूल पर उतार लिया जिसका अर्थ होता था कि स्टीमर संकट में है। फिर उसने स्टीमर के एक कोने में लगी छोटी-सी तोप को दागना शुरू किया। जहाज़ इस संकेत को समझ गया और सहायता के लिए नाव की तरफ बढ़ने लगा। स्टीमर के कप्तान ने जहाज़ के कप्तान को सारा किस्सा बताया। वह मिस्टर फाग और अबदा को जापान पहुंचाने के लिए राज़ी हो गया।





9

हांगकांग से जो जहाज़ जापान जाने वाला था वह 7 नवम्बर की शाम को साढ़े छः बजे रवाना हुआ। दूसरे दिन सवेरे जहाज़ियों ने जहाज़ की छोटी छत पर एक विचित्र यात्री को देखा, जो लड़खड़ा रहा था और जिसके बाल अस्त-व्यस्त थे। यह मिस्टर फाग का नौकर जीन ही था।

हुआ यह था कि जीन को गुप्तचर ने उस दिन खूब शराब पिलाई थी और वह नशे में लगभग बेहोश था, जब उसे होश आया तो उसने अपने-आपको अफीमचियों के बीच लेटा हुआ पाया, नशा अब भी पूरी तरह से उतरा हुआ नहीं था, लेकिन फिर भी उसे याद आया कि वह किस काम से निकला था। वह लड़खड़ाता हुआ सीधा बन्दरगाह पहुंचा और यह सोचकर कि मिस्टर फाग भी जहाज़ में सवार हो गए होंगे, वह जहाज़ में चढ़ गया। जहाज़ की छत पर जाकर एक कोने में आराम से लेट गया। जब दूसरे दिन सवेरे उसकी नींद खुली, तब जहाज़ हांगकांग से बहुत दूर आ चुका था।

उसने जहाज में मिस्टर फाग और अबदा को खोजना शुरू किया। जब उसे कुछ दिक्कत हुई तो वह कप्तान के दफ़्तर में चला गया। वहां उसने ख़ज़ांची से पूछताछ की तो पता चला कि उस जहाज़ में मिस्टर फाग या अबदा में से कोई यात्रा नहीं कर रहा है। पहले तो जीन को शक हुआ कि कहीं वह किसी गलत जहाज़ में तो सवार नहीं है। लेकिन अन्त में उसे अच्छी तरह मालूम हो गया कि यही वह जहाज़ है और योकोहामा जा रहा है। लेकिन मिस्टर फाग इसमें नहीं हैं।

अब जीन को अपनी असली हालत मालूम हुई। वह जापान जा रहा था और उसकी जेब में एक पैसा नहीं था। लेकिन जहाज़ का किराया वह पहले ही जमा कर चुका था। किराया उसने तीन आदमियों का जमा किया था, इसलिए जहाज़ में तो उसे कोई दिक्कत होने की सम्भावना नहीं थी, और उसे आगे के बारे में सोचने के लिए पांच दिन का मौका भी था।

13 तारीख को जहाज़ योकोहामा पहुंचा। जीन भी दूसरे यात्रियों के साथ नीचे उतर गया। उसके पास कुछ था ही नहीं, इसलिए चुंगी वालों ने भी उसको नहीं रोका। अब जापान की अनजान सड़कों पर भटकते फिरने के अलावा उसके लिए कोई और चारा नहीं था। पहले तो उसने सोचा कि चलकर जापान स्थित ब्रिटिश या फ्रांसीसी राजदूत से सहायता की मांग करे, लेकिन फिर उसने ऐसा करना ठीक नहीं समझा, क्योंकि उसके लिए मालिक से पूछताछ कर लेना जरूरी था।

कोई और काम न होने पर वह धीरे-धीरे सड़कों पर चहलकदमी करने लगा। थोड़ी देर बाद उधर से एक लड़का एक बड़ा-सा तख़्ता कन्धे पर उठाए गुजरा। उस तख़्ते पर लिखे हुए विज्ञापन में यह बताया गया था कि जापान सरकस के कलाबाज़ों की एक मण्डली अमेरिका रवाना होने के पहले एक-दो दिन अपने खेल दिखाने वाली है। जीन फौरन उस लड़के के पीछे हो लिया। कुछ ही देर में वह उसके पीछे-पीछे उस जगह पहुंच गया जहां मण्डली डेरा डाले पड़ी थी। वहां जाकर जीन ने कम्पनी के मैनेजर की तलाश की और उसके पीछे-पीछे वह उस जगह पहुंच गया जहां मण्डली डेरा डाले पड़ी थी। वहां जाकर जीन ने कम्पनी के मैनेजर की तलाश की और उससे कहा, 'मैं एक फ्रांसीसी हूं और पेरिस का रहने वाला हूं। मुझे अपनी मण्डली में जगह दे दीजिए। मैं भी अमेरिका जाना चाहता हूं। मैं आपकी मंडली में

बहुरूपिये का काम कर सकता हूं। मेरा काम देखकर लोग बहुत खुश होंगे।'

मैनेजर राज़ी हो गया। उसने जीन को अपनी कम्पनी में नौकर रख लिया और उसको 'जोकर' का काम सौंप दिया। अब हर खेल में जीन तरह-तरह से मुंह बनाकर और अजीब तरह की हरकतें करके दर्शकों को हंसाने की कोशिश करता था। जीन को यह काम बिलकुल पसन्द नहीं था। उसे भद्दे कपड़े पहनने पड़ते थे और दर्शकों की हंसी का पात्र बनना पड़ता था। एक लम्बी-सी नाक लगाकर उसको दर्शकों के सामने आना पड़ता था। लेकिन इसके अलावा और कोई



चारा नहीं था।

अभी कम्पनी के अमेरिका के लिए रवाना होने में कुछ देरी थी। इस बीच कम्पनी ने शहर में दो-चार खेल दिखा देने का निश्चय किया। एक दिन खेल चल रहा था। बीच में थोड़े समय के लिए दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए कुछ लोग तरह-तरह के स्वांग बनाकर मंच पर आते थे और कुछ कलाबाज़ियां दिखाते थे। जीन भी इसी दल में रहता था।

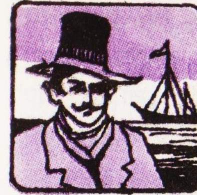
उस दिन जैसे ही वह खेल दिखाने के लिए मंच पर पहुंचा कि अचानक उसकी नज़र पहले दर्जे के दर्शकों में बैठे हुए एक आदमी पर पड़ी और वह फौरन अपनी फूलदार टोपी और नकली नाक को वहीं मंच पर फेंककर सीधा उस व्यक्ति के पास पहुंचा और उसके पैरों में गिरकर रोने लगा, 'मालिक, मेरे मालिक !'

असल में हुआ यह था कि मिस्टर फाग अपनी यात्रा के कार्यक्रम के अनुसार योकोहामा ठीक समय पर पहुंचे थे, लेकिन उन्हें वहां एक दिन रुक जाना पड़ा। किसी तरह समय काटने और अबदा का मन बहलाने के लिए वे उसे साथ लेकर सरकस देखने आए हुए थे। जीन ने उन्हें पहचान लिया। लेकिन मिस्टर फाग उसे पहचान नहीं सके, क्योंकि वह बहुरूपियों जैसी शक्ल बनाए हुए था। जब वह उनका हाथ पकड़कर रोने लगा, तभी वे उसे पहचान सके और बोले, 'अरे, जीन तुम हो ! मैं तो तुम्हें पहचान नहीं पाया। तुम कैसे पहुंचे यहां ?'

इस दृश्य को देखकर सब लोग हक्के-बक्के रह गए। खेल रुक गया। फौरन सरकस का मैनेजर दौड़ा आया और जीन को डांटने लगा। जब जीन ने बतलाया कि ये मेरे पुराने मालिक हैं और मैं इनके साथ जाऊंगा तो वह और भी बिगड़ पड़ा और हरजाना मांगने लगा। मिस्टर फाग ने अपने थैले में से कुछ नोट निकाले और मैनेजर के हाथ में रख दिए। इसके बाद वे जीन को अपने साथ लेकर बाहर निकल आए।

वहां से वे सीधे अपने होटल में आए, खाना खाया और सामान लेकर बन्दरगाह के लिए रवाना हो गए।

बन्दरगाह पर अमेरिका जाने वाला जहाज़ तैयार खड़ा था। तीनों व्यक्ति उस पर सवार हो गए।



10

फिक्स भी इसी बीच योकोहामा पहुंच गया। पहुंचते ही उसने सबसे पहले वहां ब्रिटिश राजदूत के दफ़्तर में पूछताछ की। वहां से पता चला कि मिस्टर फाग की गिरफ़्तारी का वारण्ट कलकत्ता से हांगकांग होते हुए योकोहामा पहुंच गया है। लेकिन अब वह बेकार था, क्योंकि मिस्टर फाग अंग्रेज़ी साम्राज्य की हद से बाहर आ गए थे। जापान में उनको अंग्रेज़ सरकार के वारण्ट पर गिरफ़्तार नहीं किया जा सकता था। इसलिए उसे फिर से मिस्टर फाग का पीछा करने के लिए मजबूर होना पड़ा। उसने सोचा, जब ये लन्दन पहुंचेंगे तब मैं बड़ी आसानी से इनको गिरफ़्तार करवा दूंगा।

योकोहामा से जहाज़ जिस दिन चला, उसी दिन शाम को जहाज़ की छत पर मिस्टर फाग अबदा और जीन के साथ टहल रहे थे। अचानक उसी समय वहां फिक्स भी दिखाई दे गया। फिक्स यह देखकर बहुत घबराया कि जीन भी वहां मौजूद है। उसने तो सोचा था कि वह हांगकांग में ही पड़ा होगा। वह नज़र बचाकर वहां से निकल जाना चाहता था, लेकिन जीन ने लपककर उसकी गर्दन पकड़ ली और बिना कुछ बोले उसे दो-तीन घूंसे जड़ दिए।

लोगों ने बीच-बचाव करके दोनों को अलग कर दिया। मिस्टर फाग ने भी जीन को डांटा। जीन कुछ नहीं बोला। वह अभी फिक्स के बारे में अपने मालिक को बताना नहीं चाहता था। जब भीड़ कुछ छंट गई तो फिक्स जीन को एक तरफ ले गया और कहने लगा, 'अच्छा,

तुमने मारपीट कर ली, मैं जानता था कि तुम बहुत गुस्से में होगे। खैर, छोड़ो इस बात को, और सुनो, अब तक मैं तुम्हारे मालिक के खिलाफ था और हर जगह उनको रोकने की कोशिश कर रहा था, लेकिन अब तुम्हें घबराने की कोई जरूरत नहीं है। जहाज़ सीधा अमेरिका जा रहा है। रास्ते में मुझे कुछ नहीं करना है। लेकिन इतना याद रखो कि इंग्लैंड पहुंचने के बाद तुम्हारे मालिक बच नहीं सकेंगे। मैं उनको तुरंत गिरफ़्तार करवा दूंगा। इंग्लैंड पहुंचने पर तुम्हें भी मालूम हो जाएगा कि



तुम्हारे मालिक कैसे हैं। तब तक यात्रा के दौरान हम दोनों एक-दूसरे के मित्र की तरह ही रहें, तो ज़्यादा अच्छा है।'

जीन ने दांत पीसते हुए कहा, 'ठीक है, तुम अपना काम किए जाओ, लेकिन मैं तुम्हारा दोस्त नहीं हो सकता ! और याद रखो, अगर आगे कभी तुमने मुझे धोखा देने की कोशिश की तो तुम्हारी गर्दन मरोड़ दूंगा !'

ग्यारह दिन बाद 3 दिसम्बर को जहाज़ सवेरे सात बजे सान फ्रांसिस्को पहुंचा। इस तरह अब मिस्टर फाग की अमेरिका यात्रा आरम्भ हुई। अब तक वे अपनी यात्रा के कार्यक्रम के अनुसार ठीक ही चल रहे थे। उनके अन्दाज़ से न तो कोई दिन बढ़ा और न कोई दिन घटा।

सान फ्रांसिस्को पहुंचने पर मिस्टर फाग ने सबसे पहला काम यह किया कि पता लगाया, न्यूयार्क के लिए गाड़ी कब छूटने वाली है। गाड़ी शाम को छूटने वाली थी। इस तरह पूरे दिन का समय उनके पास था। उन्होंने नगर के प्रसिद्ध 'इण्टरनेशनल होटल' में डेरा डाला। खा-पीकर वे अपना वीज़ा ठीक कराने के लिए अबदा के साथ ब्रिटिश दूत के दफ़्तर की ओर चल पड़े। जब वे चलने लगे तो जीन ने कहा, 'मालिक, हम लोगों को कुछ हथियार खरीद लेने चाहिए। हमारे पास कम-से-कम दो-एक राइफलें और दो-तीन रिवाल्वरों का होना जरूरी है, क्योंकि सुना है कि रास्ते में रेड इंडियन लोग गाड़ी रोककर उस पर हमला कर देते हैं और खूब लूट-पाट मचाते हैं। वे लोग जिसे खाली हाथ पाते हैं, उसकी जान ले लेते हैं !'

मिस्टर फाग ने उसकी बात मान ली और हथियार खरीदने के लिए उसको कुछ रुपए दे दिए।

शाम को फिर यात्रा की तैयारी हुई। होटल में खाना खाकर वे लोग स्टेशन पहुंचे। वहां न्यूयार्क जाने वाली गाड़ी तैयार खड़ी थी। सब लोग उसमें सवार हो गए। गुप्तचर भी उन्हीं के साथ यात्रा कर

रहा था।

सान फ्रांसिस्को से न्यूयार्क तक अर्थात् अमेरिका के इस छोर से उस छोर तक, बिना कहीं गाड़ी बदले रेल से यात्रा की जा सकती है। लगभग 3786 मील लम्बी यह लाइन संसार की सबसे लम्बी लाइनों में से एक मानी जाती है। एक ज़माने में इतनी लम्बी यात्रा में कम-से-कम छः महीने का समय लगता था, लेकिन रेल से यह दूरी सिर्फ सात दिन में तय की जा सकती है। अब तो इस लाइन पर यात्रा करने में किसी प्रकार का सकट नहीं रह गया है। लेकिन जब मिस्टर फाग यात्रा पर निकले थे, उन दिनों इस लाइन की यात्रा कभी-कभी बड़ी खतरनाक हो जाती थी। जंगली जानवरों और रेड इंडियनों के आक्रमण होते रहते थे।

मिस्टर फाग को आशा थी कि वे सात दिनों में अवश्य ही न्यूयार्क पहुंच जाएंगे, जहां 11 दिसम्बर तक उन्हें लिवरपूल के लिए कोई जहाज़ मिल जाएगा। जब गाड़ी लगभग डेढ़ हज़ार मील की यात्रा पूरी कर चुकी तो अचानक कुछ लोगों के चिल्लाने और गोलियों के चलने की आवाज़ें आने लगीं।

गाड़ी के सभी डिब्बे इस तरह जुड़े हुए थे कि चलती हुई गाड़ी में एक डिब्बे से दूसरे डिब्बे में जाया जा सकता था। शोर बढ़ता ही जा रहा था। यात्री घबराने लगे। अंत में मिस्टर फाग अपने को नहीं रोक सके और पिस्तौल हाथ में लिए हुए पहले वाले डिब्बे की ओर बढ़ चले। फिक्स ने भी अपनी रिवाल्वर निकाल ली। वह भी सहायता के लिए उनके साथ हो गया। वहां पहुंचने पर उन्हें पता चला कि जंगली रेड इंडियन लोगों का एक दल गाड़ी पर चढ़ आया है।

कुछ जंगली इंजन में चढ़ गए थे। उन्होंने ड्राइवर और ख़लासी को अधमरा कर डाला। हमलावरों के सरदार ने गाड़ी रोकने की कोशिश की, लेकिन उसे पता ही नहीं था कि इंजन का कौन-सा पुर्जा कैसे चलता है। जल्दी-जल्दी में उसने जो कुछ किया, उससे इंजन की रफ़्तार

और भी तेज़ हो गई। जंगली अब तक कई डिब्बों में घुस आए थे। उन्होंने कुछ यात्रियों को मार भी डाला था और कई को घायल कर डाला था।

इस लड़ाई को किसी तरह खत्म करना बहुत जरूरी था। जंगलियों ने एक तरह से क़त्लेआम मचा रखा था। अगर दस मिनट के भीतर झगड़ा खत्म न हो जाता तो शायद गाड़ी में एक भी आदमी ज़िन्दा न बचता। इसलिए गाड़ी को रोकना बहुत ज़रूरी था। गाड़ी अगर रुक जाती तो अगले स्टेशन पर खबर भेजी जा सकती थी, जो वहां से लगभग दो मील दूर था। वहां पर अमेरिकी सिपाहियों का एक दस्ता हमेशा तैयार रहता था। अगर गाड़ी उस स्टेशन को भी पार कर जाती तो फिर रेड इंडियनों का मुकाबला करना असम्भव हो जाता।

मिस्टर फाग ने देखा कि गार्ड बड़ी बहादुरी के साथ हमलावरों से मोर्चा ले रहा था। थोड़ी देर में वह बुरी तरह घायल होकर गिर पड़ा। गिरते-गिरते उसने कहा, 'गाड़ी को पांच मिनट के भीतर ही रोक देना चाहिए, वरना हम सब लोग मारे जाएंगे।'

यह सुनकर जीन बोला, 'आप लोग इसकी चिंता न कीजिए। मैं अभी इसका इन्तज़ाम करता हूं।' यह कहकर वह हमलावरों की नज़र बचाकर धीरे से वहां से खिसक गया। फिर वह एक खिड़की से बाहर निकलकर बाहर-ही-बाहर खिड़कियों का सहारा लेते हुए आगे बढ़ने लगा। अन्त में वह पहले डिब्बे के सिरे तक जा पहुंचा, जिससे इंजन जुड़ा हुआ था।

गाड़ी को रोकने का सबसे अच्छा उपाय यह था कि इंजन को गाड़ी से अलग कर दिया जाए, लेकिन चलती हुई गाड़ी में यह काम कर पाना आसान नहीं था। फिर भी जीन अपनी कोशिश में लगा रहा। उसने थोड़ी ही देर में कुछ पेंच खोल दिए और उस ज़ंजीर को ढीला कर दिया, जिससे गाड़ी इंजन से जुड़ी हुई थी। फिर बहुत कोशिश करके

उसने एक धक्का देकर उस बड़े से कांटे को अलग कर दिया, जिससे डिब्बा इंजन से जुड़ा हुआ था। ज़ंजीर कमजोर थी और इंजन के दो-तीन झटके लगने के बाद वह टूट गई। अब इंजन और गाड़ी में सम्बन्ध खत्म हो गया। इंजन अपनी रफ्तार से भागता रहा और गाड़ी धीमी पड़ने लगी।

जीन फिर से डिब्बे के अन्दर लौट आया। उसने अपने साथियों को इशारा किया। लोगों ने डिब्बे के भीतर जंज़ीरें खींचकर ब्रेक लगाना शुरू किया। थोड़ी ही देर बाद गाड़ी फोटकेरी नामक स्टेशन से लगभग सौ फुट की दूरी पर रुक गई।

शोर और गोलियों के चलने की आवाज़ सुनकर स्टेशन पर तैनात सिपाही फौरन दौड़ पड़े। गाड़ी के रुकते-रुकते बहुत-से जंगली भाग निकले और जो बच गये वे सिपाहियों की गोलियों के शिकार हुए। जब प्लेटफार्म पर यात्रियों की गिनती हुई तो पता चला कि जीन और दूसरे दो यात्री गायब हैं। कोई भी यह नहीं बता सका कि ये तीनों आदमी लड़ाई में मारे गए या रेड इंडियनों द्वारा बन्दी बना लिए गए।

लड़ाई में कई आदमी घायल हुए थे, लेकिन किसी को गहरी चोट नहीं आई। अबदा तो बिल्कुल बच गई थी और मिस्टर फाग को भी बहुत कम चोट आई थी। मिस्टर फाग सोच रहे थे कि अब मुझे क्या करना चाहिए। उन्होंने सोचा कि जब मेरा नौकर पकड़ लिया गया है तो मेरा कर्त्तव्य हो जाता है कि मैं उसको छुड़ाने की कोशिश करूं। हालांकि मिस्टर फाग जानते थे कि एक दिन की देरी होने से उन्हें न्यूयार्क में स्टीमर नहीं मिल सकेगा और वे बाज़ी हार जाएंगे। फिर भी उन्होंने कहा, 'मैं जीन का पता जरूर लगाऊंगा और उसको प्राप्त करूंगा ! चाहे ज़िन्दा या मरा, मैं उसको जरूर खोज निकालूंगा !'

स्टेशन के पास ही किला था। वहां कुछ सेना रहती थी। स्टेशन मास्टर ने ख़बर भेजकर कमाण्डर और कुछ सैनिकों को सहायता के

लिए बुला लिया था। जब कमाण्डर को मि. फाग का निश्चय मालूम हुआ तो वह बोला, 'आप अकेले ही बन्दियों की खोज में नहीं जाएंगे। मैं अपने तीस आदमियों को आपके साथ भेजता हूं।' यह कहकर उसने सिपाहियों में से तीन आदमियों को चुनकर अलग निकाला और मि. फाग के साथ जाने को कहा।

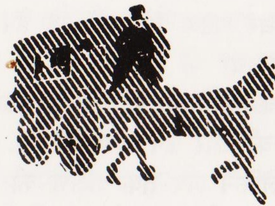
मि. फाग ने अपना थैला अबदा को दे दिया और उससे विदा ली। रवाना होने से पहले उन्होंने सिपाहियों से कहा, 'दोस्तो, अगर हम लोग बन्दियों को छुड़ा लेंगे तो मैं आप लोगों के बीच एक हज़ार पौंड का इनाम बांट दूंगा।'

पूरा दिन बीत गया। शाम हो गई, लेकिन मि. फाग और उनके साथियों की कोई खबर नहीं मिली। लोग सोचने लगे कि शायद उन लोगों को भी रेड इंडियनों ने गिरफ्तार कर लिया है; या कहीं वे लोग रास्ता भूलकर इधर-उधर भटक तो नहीं रहे हैं। अबदा भी बहुत ज़्यादा चिन्तित थी। गुप्तचर भी उस रात को सो नहीं सका। किसी तरह रात बीती। सवेरे कप्तान बहुत चिन्तित हो उठा। उसने सिपाहियों की एक टुकड़ी तैयार की और उन लोगों को मि. फाग की खोज में जाने के लिए कहा। लेकिन जब तक दक्षिण की ओर से कुछ शोर सुनाई दिया।

थोड़ी देर में मि. फाग के साथ गए हुए सिपाही कतार बांधकर लौटते हुए दिखाई दिए। उनके आगे-आगे मि. फाग जीन के साथ चल रहे थे। वे लोग दूसरे दो यात्रियों को भी छुड़ा लाए थे। स्टेशन से कुछ मील की दूरी पर रेड इंडियन लोगों का गांव पड़ता था। मि. फाग के साथियों ने जाते ही उस गांव को घेर लिया। डराने-धमकाने पर गांव वालों ने उस जगह का पता बता दिया, जहां जीन और दूसरे यात्रियों को बन्द करके रखा गया था। इस तरह बिना किसी तरह का झगड़ा हुए मि. फाग बन्दियों को छुड़ा लेने में सफल हुए।

मिस्टर फाग ने सिपाहियों को इनाम दिया। गाड़ी तब तक वहां

से जा चुकी थी, क्योंकि इंजन के ड्राइवर और ख़लासी को जब होश आया और उन्होंने इंजन को बेतहाशा भागते हुए पाया तो कोशिश करके उसको रोक लिया। वे उसको वापस लौटाकर स्टेशन लाए और गाड़ी को उससे जोड़कर आगे चल दिए। अगली गाड़ी दूसरे दिन शाम से पहले नहीं मिलने वाली थी।





11

मिस्टर फाग अब अपने निश्चित कार्यक्रम से चौबीस घंटे पीछे थे। जीन को बड़ा अफसोस था कि उसकी वजह से उसके मालिक का नुकसान हुआ था। इसी बीच गुप्तचर फिक्स उनके पास पहुंचा और कहने लगा, 'महाशयजी, क्या सचमुच आपको बहुत जल्दी है ? क्या 11 तारीख तक ज़रूर आपको न्यूयार्क पहुंच जाना चाहिए ?'

मिस्टर फाग ने कहा, 'हां, मेरे लिए यह बहुत ज़रूरी है, क्योंकि 11 तारीख को रात में 9 बजे से पहले न्यूयार्क से लीवरपूल के लिए मुझे जहाज़ मिल जाएगा। अगर रेड इंडियनों का यह हमला न हुआ होता तो मैं 11 तारीख को सवेरे न्यूयार्क पहुंच जाता।'

फिक्स बोला। इस तरह आप 20 घंटे पीछे हैं। वैसे आप सवेरे वहां पहुंचते, लेकिन अगर आप चाहें तो जहाज़ के छूटने के पहले शाम तक न्यूयार्क पहुंच सकते हैं।'

'कैसे ? क्या यहां से पैदल जाएंगे ?' मिस्टर फाग ने मज़ाक में कहा।

'जी, नहीं साहब, पैदल नहीं, स्लेज़गाड़ी में जाएंगे। ऐसी स्लेज़गाड़ी में, जिसमें पाल लगी होती है। एक आदमी ने मुझे यह सुझाव दिया था। मुझे भी न्यूयार्क जल्दी पहुंचना है। अगर आप राज़ी हों तो इससे चला जाए।'

भला मिस्टर फाग क्यों न राज़ी होते ! फौरन स्लेज़वाले को बुलाया गया। वह अपनी विचित्र तरह की स्लेज़गाड़ी लेकर आ पहुंचा।

यह बर्फ पर फिसलनेवाली एक छोटी-सी गाड़ी थी, जिसमें नाव की तरह पाल लगी थी। जब हवा तेज़ चलती तो पाल खोल दिया जाता था। हवा के न होने पर इसमें कुत्ते या बारहसिंघे जोते जाते थे। स्लेज़वाले ने कहा, 'मैं बर्फीले रास्ते से आप लोगों को ओमाहा स्टेशन तक कुछ घंटों में पहुंचा दूंगा। वहां से शिकागो और न्यूयार्क के लिए बराबर गाड़ियां छूटती हैं। हवा का ज़ोर ठीक रहा तो हम लोग दो सौ मील की यात्रा पांच घंटे में पूरी कर लेंगे।'

हवा ने पूरा साथ दिया। स्लेज़गाड़ी चालीस मील प्रति घंटे के हिसाब से दौड़ी चली जा रही थी। सुबह आठ बजे से लोग रवाना हुए और एक बजे तक ओमाहा पहुंच गए। वहां उन्हें शिकागो के लिए गाड़ी तैयार मिली। दूसरे दिन 10 तारीख को वे शिकागो पहुंच गए। यहां से न्यूयार्क 900 मील दूर था और गाड़ियां बराबर मिला करती थीं। कुछ देर तक स्टेशन पर इन्तज़ार करने के बाद उन्हें न्यूयार्क के लिए गाड़ी मिल गई।

11 दिसम्बर को रात में साढ़े ग्यारह बजे मिस्टर फाग की गाड़ी न्यूयार्क स्टेशन पर पहुंच गई। न्यूयार्क हडसन नदी के मुहाने पर बसा है। स्टेशन से सीधे वे लोग घाट के लिए रवाना हो गए। वहां जाने पर पता चला कि लिवरपूल जाने वाला जहाज़, जिसका नाम 'चाइना' था, लगभग पौन घंटे पहले यहां से रवाना हो चुका है। यह सुनकर मिस्टर फाग थोड़ी परेशानी में पड़ गए। फिर भी उन्होंने शांति से अपने साथियों से कहा, 'खैर, कोई बात नहीं, अब हम लोग कल सोचेंगे कि आगे के लिए क्या उपाय निकाला जाए।'

दूसरे दिन 12 दिसम्बर था। इस दिन सवेरे सात बजे से लेकर 21 दिसम्बर के पौने नौ बजे तक नौ दिन और पौने चौदह घंटे का समय बाकी था। अगर मि. फाग 'चाइना' जहाज़ से जाते तो ठीक समय पर लन्दन पहुंच सकते थे। उस दिन सवेरे ही वे अपने साथियों के साथ बन्दरगाह पर जा पहुंचे। पूछताछ करने पर उन्हें पता चला

कि 'एनरीका' नामक एक फ्रांसीसी जहाज़ यहां से एक मील की दूरी पर खड़ा है। वहां से वह फ्रांस के बोर्दो नामक बन्दरगाह के लिए रवाना होने वाला है।

मिस्टर फाग फौरन एक नाव किराये पर लेकर फ्रांसीसी जहाज़ के पास जा पहुंचे। उन्होंने आवाज़ देकर कप्तान को बात करने के लिए बुलाया। कप्तान जहाज़ की छत पर आ गया। मिस्टर फाग ने कहा, 'कप्तान साहब, क्या आप मुझे और तीन यात्रियों को लिवरपूल पहुंचा देंगे ?'

कप्तान ने कहा, 'नहीं, मैं बोर्दो जा रहा हूं। लिवरपूल मुझे नहीं जाना है।'

मिस्टर फाग ने उससे बहुत कहा, लेकिन वह टस-से-मस नहीं हुआ। कप्तान ही इस जहाज़ का मालिक था। मिस्टर फाग उसको पूरे जहाज़ का किराया देने के लिए तैयार थे। लेकिन फिर भी वह तैयार नहीं हुआ। अन्त में मिस्टर फाग ने बोर्दो जाने का निश्चय किया। वहां से वे किसी तेज़ नाव में बैठकर लिवरपूल पहुंच सकते थे। कप्तान ने दो सौ पौंड फी आदमी के हिसाब से किराया मांगा।

मिस्टर फाग राज़ी हो गए। जहाज़ को वहीं खड़े रहने को कहकर वे वापस घाट पर आए और अपने साथियों को लेकर जहाज़ के पास पहुंच गए। कप्तान ने उन लोगों को जहाज़ में चढ़ा दिया। गुप्तचर भी उन लोगों के साथ था। वह अपना किराया फौरन दे देता था और मिस्टर फाग को अभी तक यह मालूम नहीं हुआ था कि यह खुफ़िया पुलिस का आदमी है। वे उसको अपने साथ के एक यात्री की तरह समझते थे।

12

13 दिसम्बर को जहाज़ की छत पर, जहां कप्तान खड़ा होता था, कप्तान की जगह मिस्टर फाग खड़े हुए थे।

उधर कप्तान अपने कमरे में ताले में बन्द था और ज़ोर-ज़ोर से चीख़-चिल्ला रहा था।

बात यह थी कि मिस्टर फाग को ठीक समय पर लिवरपूल पहुंचना था। कप्तान लिवरपूल जाने के लिए राज़ी नहीं हो रहा था। अगर मिस्टर फाग बोर्दो जाते और वहां से लिवरपूल जाते तो इसमें बहुत देरी होने की संभावना थी, इसलिए उन्होंने जहाज़ के सभी जहाज़ियों और दूसरे नौकरों-चाकरों को घूस देकर अपनी तरफ मिला लिया और कप्तान को उसके कमरे में कैद करा दिया। अब जहाज़ लिवरपूल की तरफ जा रहा था।

जहाज़ अतलांतक महासागर को आधे से ज़्यादा पार कर चुका था कि अचानक 18 दिसम्बर को जहाज़ के इंजीनियर ने आकर मिस्टर फाग से कहा, 'आपने जहाज़ को बीच में रुकने नहीं दिया। इसका सारा कोयला ख़त्म हो गया। अब कल जलाने के लिए भी कोयला नहीं बचा है।'

मिस्टर फाग ने हुक्म दिया, 'इस समय मैं जहाज़ का कप्तान हूं और मेरा हुक्म है कि इंजन की आग ठंडी न होने दी जाए। जहाज़ में जो भी लकड़ी का सामान मिल सके उस सबको भट्ठी में झोंक दो, लेकिन जहाज़ की रफ्तार कम न करो !' इसके बाद मिस्टर फाग ने जीन को एक चाबी देते हुए कहा, 'जाओ, कप्तान स्पीडी को मेरे पास बुला लाओ !' जीन उसको बुला लाया।

कप्तान की शक्ल देखने लायक थी। वह बहुत नाराज़ था और गालियां बक रहा था। मिस्टर फाग ने शान्ति से कहा, 'कप्तान साहब, जहाज़ लिवरपूल जा रहा है। अभी हमें 770 मील की यात्रा और करनी है। मैंने आपको इसलिए बुलाया था कि आप जहाज़ मेरे हाथ बेच दें।'

कप्तान ने गुस्से से कांपते हुए कहा, 'डाकू कहीं के ! मुझे नहीं बेचना है जहाज़ !'

'लेकिन मुझे इसको जलाना है। इसलिए मैं इसका दाम तुमको देना चाहता हूं।

कप्तान ने कहा, 'क्या तुम मेरा जहाज़ जलाना चाहते हो ? दस हज़ार पौंड का एक जहाज़ तुम जला डालना चाहते हो ?'

मिस्टर फाग ने शान्ति से कहा, 'क्या किया जाए, मजबूरी है ! कम-से-कम इसका लकड़ी का सामान तो जलाना ही पड़ेगा, क्योंकि जहाज़ में ईंधन की कमी पड़ गई है। मैं तो तुमको दस हज़ार पौंड के बदले ग्यारह हज़ार दूंगा, घबराओ मत।' यह कहते हुए मिस्टर फाग ने कप्तान के हाथ में नोटों का एक बंडल रख दिया।

नोटों को देखकर कप्तान का गुस्सा हवा हो गया। जहाज़ बीस साल पुराना था। भला इससे अच्छा सौदा और क़्या हो सकता था ! उसने खुद अपने आदमियों को हुक्म दिया कि जहाज़ में जहां-जहां लकड़ी लगी हो उसको निकालकर भट्ठी में झोंक दिया जाए।

जहाज़ के कमरों में और छतों में लगी लकड़ियों को उखाड़कर भट्ठी में झोंक दिया गया। 20 तारीख तक जहाज की लगभग सारी लकड़ी खत्म हो गई। मिस्टर फाग फिर रोशनी में पड़ गए, हालांकि निराश होना उन्होंने नहीं सीखा था। जहाज़ को किसी तरह आयरलैंड के क्वींसटाउन नामक एक छोटे-से बन्दरगाह में रोका गया। इस बन्दरगाह से डाक रेल के ज़रिए डबलिन तक पहुंचाई जाती थी और

डबलिन से बहुत तेज़ चलने वाली नावों के ज़रिए उसे लिवरपूल पहुंचा दिया जाता था। इस तरह डाक बड़े जहाज़ों के बजाय 12 घंटे पहले ही लिवरपूल पहुंच जाया करती थी।

मिस्टर फाग ने भी यही रास्ता अपनाने का निश्चय किया। इस तरह फाग के 12 घण्टे बच जाते और वे शाम को लिवरपूल पहुंचने के बजाय दोपहर को वहां पहुंच जाते। वहां से पौने नौ बजे तक वे लन्दन पहुंच सकते थे।

उन्होंने कप्तान को काफी रुपये देकर विदा किया। कप्तान रुपये पाकर खुश हो गया था, इसलिए उसने किसी से कोई शिकायत नहीं की। वहां पहुंचने पर गुप्तचर के मन में हुआ कि अब तो मिस्टर फाग इंग्लैंड की जमीन पर है, इनको आसानी से गिरफ्तार किया जा सकता है। लेकिन फिर न जाने क्या सोचकर वह रुक गया।

क्वींसटाउन से वे लोग रेल द्वारा डबलिन गए और वहां स्टीमर में बैठकर 20 दिसम्बर को 12 बजकर 21 मिनट पर लिवरपूल पहुंच गए। अब वहां से लन्दन सिर्फ छः घण्टे की दूरी पर था। लेकिन जैसे ही मिस्टर फाग ने लिवरपूल के घाट पर पैर रखा, गुप्तचर उनके पास आया और उनके कन्धे पर हाथ रखकर बोला, 'कहिए, आपका ही नाम मिस्टर फाग है ?'

मिस्टर फाग ने आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए कहा, 'हां, हां, यही नाम मेरा है ! आपको तो मालूम ही है। आपका मेरा परिचय हो चुका है।'

फिक्स ने गिरफ़्तारी का वारण्ट दिखाते हुए कहा, 'तो, सरकार की आज्ञा से मैं आपको गिरफ़्तार करता हूं !'



13

इस तरह मिस्टर फाग कैद कर लिए गए। उन्हें चुंगीघर के एक कमरे में बन्द कर दिया, जहां से दूसरे दिन उन्हें लन्दन भेजा जाने वाला था। जीन और अबदा भी उनके साथ थे।

पृथ्वी के चारों ओर की गई अपनी इस यात्रा के दौरान मिस्टर फाग को कई बार कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। लेकिन अब तक उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी थी। लेकिन अब यात्रा लगभग खत्म होने को आई थी। अगर उन्हें रोका न गया होता तो वे छः घण्टे में लन्दन पहुंच सकते थे और इस तरह 21 दिसम्बर की शाम को पौने नौ बजे तक 80 दिनों में अपनी संसार-यात्रा को पूरा कर सकते थे, और बाज़ी जीत सकते थे। इस गिरफ़्तारी से वे बिल्कुल निराश हो गए।

दो घण्टे बाद गुप्तचर दौड़ा-दौड़ा फिर से उनके पास आया। हांफते-हांफते वह बोला, 'महाशय जी, मुझसे बड़ी गलती हो गई, कृपया मुझे माफ कर दीजिए ! असल में उस बैंक की चोरी के सिलसिले में तीन दिन पहले ही असली चोर को पकड़ा जा चुका है। आप अब पूरी तरह से आज़ाद हैं।'

तो अब मिस्टर फाग स्वतन्त्र थे ! लेकिन इस मूर्ख गुप्तचर की करतूत के कारण उन्हें दो घण्टे की देर हो गई थी। अब वे किसी भी हालत में समय पर लन्दन नहीं पहुंच सकते थे। इस तरह वे अपनी बाज़ी हार बैठे थे। जब गुप्तचर ने कहा कि वे आज़ाद हैं तो थोड़ी

देर तक वे उसका चेहरा देखते रह गए और फिर आगे बढ़कर उन्होंने एक ज़ोर का घूंसा उसकी नाक पर जड़ दिया। गुप्तचर ज़मीन पर आ गिरा।

गुप्तचर को सज़ा देकर मिस्टर फाग जीन और अबदा के साथ एक गाड़ी में बैठकर स्टेशन की ओर भागे। लन्दन के लिए गाड़ी जा चुकी थी। मिस्टर फाग ने बाज़ी जीतने की आखिरी कोशिश करने का निश्चय किया। उन्होंने स्टेशन मास्टर को मिलाया और लन्दन के लिए एक डिब्बे की एक विशेष गाड़ी तैयार कराई। उन्होंने किराया दिया और ड्राइवर को भी इनाम देने का वादा किया। यह गाड़ी साढ़े पांच घंटे में लन्दन पहुंची। जब मिस्टर फाग लन्दन स्टेशन पर उतरे उस समय घड़ी में 8 बजकर 50 मिनट हुए थे।

मिस्टर फाग ने पूरी दुनिया का चक्कर लगा डाला था, लेकिन दुर्भाग्य से वे सिर्फ पांच मिनट देरी से पहुंचे थे। अब वे बाज़ी तो हार ही चुके थे, इसलिए वहां से लौटकर क्लब में नहीं गए। वे सीधे अपने घर के लिए रवाना हो गए।

घर पहुंचकर उन्होंने मकान की सफाई कराई। थोड़ी ही देर में जीन ने घर को सजाकर चिमनी में आग जला दी। मिस्टर फाग और अबदा आग के पास आ बैठे। मिस्टर फाग ने कुछ देर तक चुप रहकर कहा, 'अबदा, तुम शायद मुझे कभी माफ नहीं कर पाओगी। मेरे कारण तुम्हें बड़ी तकलीफ हुई। फिर भी मैं किसी तरह कोशिश करके तुमको यहां तक ले आया और आगे हालैंड भी भेज देता। लेकिन अब मैं बिलकुल दिवालिया हो गया हूं। मेरे पास दो-चार पौंड ही बच पाए हैं। जिस समय मैंने तुमको अपने साथ चलने के लिए कहा था, उस समय मैं एक धनी आदमी था और मुझे बाज़ी के रुपये भी मिलने वाले थे। अब मैं बिलकुल कंगाल हो गया हूं। बाज़ी तो हाथ से निकल ही गई, अपने भी सारे पैसे खर्च हो गए।...मैंने तो सोचा था कि मैं तुम्हें काफी सारा धन दे दूंगा, जिससे तुम्हारी ज़िन्दगी आसानी से चल

सकेगी, लेकिन मैं तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं कर पाया।

मिस्टर फाग को इस तरह निराश होते देखकर अबदा बोली, 'मिस्टर फाग, आपने मेरे लिए जितना किया है उससे अधिक कोई क्या कर सकता है ? आपने मुझको भयानक मृत्यु से बचाया और यहां तक पहुंचा दिया। भला यही काम क्या कम है ? मैं हमेशा आपकी ऋणी रहूंगी। मैंने अंग्रेज़ी की अच्छी शिक्षा पाई है। मुझे यहां कोई भी काम मिल जाएगा। या मैं अपने चचेरे भाई के पास हालैंड चली जाऊंगी। परन्तु मिस्टर फाग, अब आपका क्या होगा ?'



मिस्टर फाग ने निराशा से हंसते हुए कहा, 'मेरा ? भला मेरा क्या हो सकता है ! किसी तरह ज़िन्दगी काट दूंगा। अकेला ही तो हूं। न कोई मेरा सम्बन्धी है और न कोई इष्टमित्र। जब मेरे पास पैसे थे तो क्लब में कुछ मित्र भी थे। अब भला वे मुझसे क्यों मिलने लगे !'

अबदा कुछ देर तक सोचती रही और फिर बहुत सकुचाते हुए बोली, 'मिस्टर फाग ! मैं बहुत दिनों से एक बात सोच रही हूं, लेकिन आपसे कभी कहने की हिम्मत नहीं हुई। बात यह है मिस्टर फाग कि लोग कहते हैं कि निराशा और दुःख को सहन करना तब कुछ आसान हो जाता है जब कोई सच्चे मन से हमारा साथ देने वाला हो।'

मिस्टर फाग ने कहा, 'हां, तुम्हारा कहना ठीक है, लेकिन अब मैं कहां से अपने लिए साथी लाऊं ?'

अबदा ने खड़े होकर मिस्टर फाग का हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा, 'आपने अभी कहा कि आपका कोई सम्बन्धी या मित्र नहीं है। मिस्टर फाग, क्या आप मुझे अपनी पत्नी की तरह स्वीकार करेंगे !'

मिस्टर फाग भी खड़े हो गए। एक नई आशा और उत्साह से उनकी आंखें चमकने लगीं। वे कुछ देर तक अबदा को देखते रह गए। उनसे सिर्फ इतना ही कहते बना, 'अबदा, मैं तुम्हें प्यार करता हूं। संसार में जो कुछ भी पवित्र और सत्य है उसको साक्षी रखकर मैं क़हता हूं कि मैं तुम्हारा हूं और हमेशा तुम्हारा रहूंगा।'



14

मिस्टर फाग ने दूसरे ही दिन अपने विवाह की तैयारी शुरू कर दी। वे अबदा को साथ लेकर दूसरे दिन पादरी के पास पहुंचे। उन्होंने सारी स्थिति बताकर पादरी से कहा कि हम लोग कल ही शादी करना चाहते हैं।

पादरी उनको बहुत दिनों से जानता था और यह सुनकर खुश था कि मिस्टर फाग विवाह करने जा रहे हैं। लेकिन उसने कुछ संकोच से कहा, 'परन्तु मिस्टर फाग, कल तो इतवार है।'

मिस्टर फाग ने कहा, 'जी नहीं, कल सोमवार है।'

'नहीं, नहीं, आज शनिवार है न !' पादरी ने कहा।

मिस्टर फाग ने सिर हिलाते हुए कहा, 'आज शनिवार है ? असम्भव !'

इसी बीच जीन बोल उठा, 'हां साहब, आज शनिवार ही है ! आपने असल में एक दिन की गलती कर दी—हम लोग निश्चित समय से 23 घंटे पहले यहां पहुंचे हैं !' यह कहकर जीन ने अपने मालिक को हाथ से खींचते हुए कहा, चलिए-चलिए, जल्दी कीजिए, अभी थोड़ा वक्त बाकी है। आप क्लब जाने की तैयारी कीजिए।'

मिस्टर फाग को समझते देर नहीं लगी कि वे कलकत्ता से पूर्व की तरफ यात्रा करते समय अपनी घड़ी को मिलाना भूल गए थे। अब कुछ मिनटों की देर थी। उन्होंने फौरन एक गाड़ी किराए पर ली और

कोचवान को जल्दी से जल्दी 'रिफार्म क्लब' चलने को कहा। गाड़ी ठीक पौने नौ बजे क्लब के दरवाज़े पर रुकी।

क्लब में मिस्टर फाग के मित्र उनके आने का इन्तज़ार कर रहे थे। उनमें से किसी को भी आशा नहीं थी कि मिस्टर फाग ठीक समय पर पहुंच सकेंगे। लेकिन मिस्टर फाग बिलकुल ठीक समय पर पहुंचे थे। मित्रों ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। मिस्टर फाग ने अस्सी दिन में पूरी पृथ्वी की परिक्रमा की और बीस हज़ार पौंड की बाज़ी जीती।

लेकिन मिस्टर फाग जैसे हिसाब-किताब में दुरुस्त आदमी से दिन का हिसाब लगाने में गलती कैसे हो गई ? उन्होंने कैसे समझ लिया कि वे शनिवार 21 दिसम्बर की शाम को लन्दन पहुंचे हैं, जबकि वास्तव में वे शुक्रवार 20 दिसम्बर को पहुंचे थे।

कारण स्पष्ट है जब मिस्टर फाग ने पूर्व दिशा, अर्थात् सूर्य की ओर यात्रा आरम्भ की तो प्रत्येक अंश पर उनका दिन चार मिनट छोटा होता गया। पृथ्वी पर 360 अंश होते हैं। इनमें चार से गुणा करने पर ठीक चौबीस घंटे का समय निकलता है। इस तरह मिस्टर फाग को एक दिन और मिल गया था, लेकिन इसका उन्हें पता नहीं था। जो गलती उनके नौकर जीन ने एक बार की थी, उसे अनजाने में वे स्वयं भी कर बैठे थे और इस बार खुद उनके नौकर ने उनकी गलती ठीक की।

इस प्रकार मिस्टर फाग ने ठीक अस्सी दिनों में पृथ्वी के चारों तरफ यात्रा पूरी की। अपनी इस यात्रा में उन्होंने हर तरह की सवारी का उपयोग किया—छोटी नाव, स्टीमर और जहाज़, घोड़ागाड़ी और रेलगाड़ी, हाथी, पालकी आदि। हो सकता है, कुछ लोग उनको सनकी कहें, लेकिन उन्होंने बड़े साहस, धैर्य और समय की पाबन्दी के साथ इस काम को पूरा किया ! इस यात्रा के कारण उन्होंने न सिर्फ बीस

हजार पौंड की बाज़ी जीती, बल्कि इतने सारे देशों की यात्रा का अनुभव भी प्राप्त किया और अबदा जैसी सुन्दर और भोली स्त्री को अपनी पत्नी के रूप में प्राप्त किया। भला इससे अधिक और किसी आदमी को क्या मिल सकता है !

●●●

किशोरों के लिए उपन्यास

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels)
राबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe)
खज़ाने की खोज में (Treasure Island)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी तावीज़ (Talisman)
तीसमारखां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
काला फूल (Black Tulip)
कैदी की करामात (Count of Monte Cristo)
डेविड कापरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ की रानी (Andersen's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर
(Around the World in 80 Days)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा
(20 Thousand Leagues under the Sea)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimms' Fairy Tales)
सिंदबाद की सात यात्राएं
(The Seven Voyages of Sindbad)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबीडिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)

शिक्षा  भारती